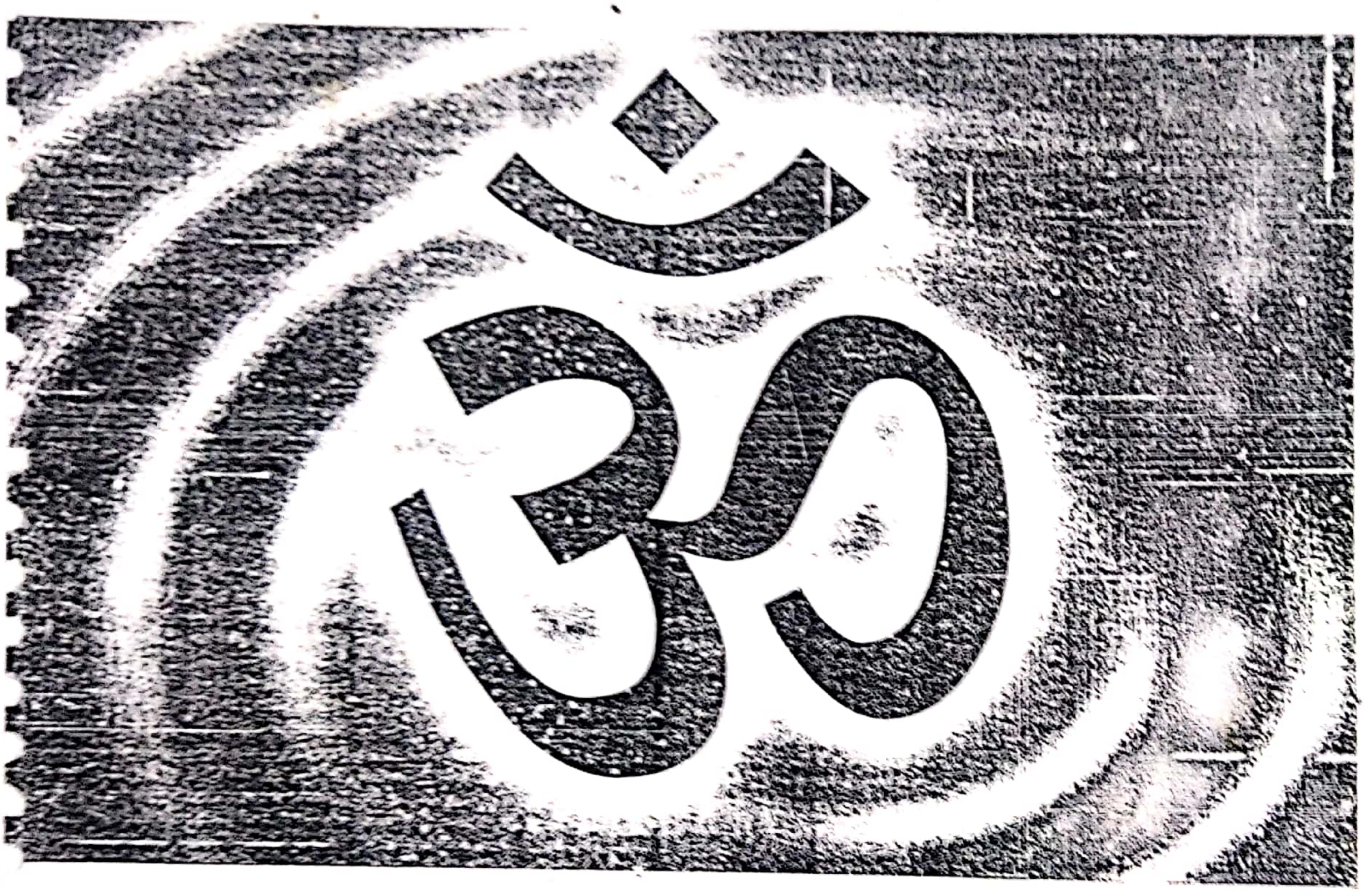

ओम सतगुरु प्रसाद

नं.	वाणी	पेज नं.
१	आनन्द	१
२	संकल्प और ख्याल	३
३	स्वभाव	५
४	ज्ञान के साधन	७
५	क्यों	९
६	निज-स्वरूप	११
७	मौत पर	१४
८	अद्वैत मत पर	१७
९	प्रेम की महिमा	१८
१०	ZERO	१९
११	सच्ची खबर	२०
१२	युक्ति से मुक्ति	२१
१३	Knower	२२
१४	MIX कर्म	२९
१५	निश्चय	३१
१६	परेशानी	३७
१७	प्रेम	४२
१८	TUNE पर	४३
१९	तपस्या	४५
२०	HOW I FEEL	४७
२१	एकरस	४९
२२	वैराग	५२
२३	शुक्राना	५९
२४	अपने पर आशिक होना	६१
२५	नम्रता	६३
२६	पुरुषार्थ	६५
२७	सत्गुर से प्रश्न उत्तर	६८
२८	पयम्बर की [illegible]	७२
२९	[illegible] आप को प्यार करना	७५
३०	मरने मिटने पर	[illegible]
३१	गुरु भक्ति	[illegible]

३२	जान छूटी लाखों पाए	८२
३३	प्रवृति-निवृति	८३
३४	मूर्ति कैसे बने	८६
३५	अनन्य भक्ति	८८
३६	समता योग	९०
३७	अद्वैत मत	९३
३८	आकाश अमृतवाणी	९९
३९	साक्षी भाव	१०१
४०	98% Spritual - 2% Physical	१०३
४१	इच्छा मात्रम् अविद्या	१०७
४२	CAUSE & EFFECT	११०
४३	मौन	११४
४४	हस्ती गुम करना	११६
४५	कर्म	११८
४६	त्याग	१२०
४७	DRAWING	१२३
४८	मैं (छोटी (i))	१२७
४९	WIRELESS	१२९
५०	सत् का अभाव नहीं करो	१३४
५१	ज्ञान में लीनता होवे	१३९
५२	निश्चय करो और कराओ	१४२
५३	आत्म निश्चय वाला ज्ञानी है	१४५
५४	क्रोध पे वाणी	१४७
५५	अमृताम्बर वाणी	१४९
५६	DIGESTION POWER	१५४
५७	BORN GREAT	१५७
५८	निर्वाण पद	१६२
५९	स्थित प्रज्ञ के लक्षण - Balance में रहना	१६६
६०	मुक्ति	१७२
६१	प्रारब्ध के चक्कर काटना	१७८
६२	एकरस	१८२
६३	आत्म - दृष्टि	१८८
	दादा भगवान का पत्र	१९०

ओम सतगुरू प्रसाद

'आनन्द' *[1]*

शान्ति से विचार करोगे तो समझ में आएगा कि तुम्हारा सच्चा स्वरूप आनन्द ही है। यह जीव ईश्वर का अंश है। शीतलता जिस प्रकार पानी का सहज स्वरूप है, उसी प्रकार तुम स्वंय आनन्द स्वरूप ही है। दुख सुख तुम्हारे वास्तविक स्वरूप नहीं है। पानी का स्वरूप तो शीतल है, अग्नि के सम्बन्ध के कारण पानी में गरमी भासती है, उसी प्रकार मन के सम्बन्ध से आत्म स्वरूप में सुख दुख भासता है। सुख दुख मन का धर्म है, आंत्मा सुखी भी नही, दुखी भी नहीं होता। आत्मा परमात्मा का अंश है। परमात्मा आनन्द स्वरूप है, आनन्द तुम्हारा सहज स्वरूप है। सुख दुख कई कारणों से आते हैं। सुख भी टिकता नहीं, दुख भी टिकता नहीं। सुख दुख दोनों भूल है। जीव स्वंय आनन्द स्वरूप है पर अज्ञान के कारण आनन्द ढुंढने बाहर जाता है। आनन्द किसी स्त्री में नहीं, पुरूष में नहीं, मोटर बंगले में नहीं, तुम्हारे अन्दर ही है - आनन्द बाहर नहीं है। संसार के पदार्थ आनन्द देते नहीं है, सुख दुख देते हैं। जो सुख देता है वो दुख भी देता है। जीव को सुख की भूख नहीं है, आनन्द की भूख है। उसे ऐसे आनन्द की इच्छा है जिससे उसकी शान्ति हमेशा कायम रहे। संसार के पदार्थों में यदि आनन्द है तो एक समान आनन्द दे। बंगला बहुत अच्छा है, परन्तु जिसे बुखार आता है, तो बहुत अच्छा बंगला उसे सुख देता है क्या? जब पेट में दर्द होता है तो बहुत अच्छा बंगला सुख देता है क्या? आनन्द संसार की किसी जड़ वस्तु में नहीं है। स्वइच्छित भोजन हो तो उसे आनन्द देता है, जिसे बुखार आया हो, तो इच्छित भोजन आनन्द क्यों नहीं देता? मन पसन्द भोजन हो और समाचार आया किसी के मरने का तो मन पसंद भोजन खाने की इच्छा क्यों नहीं होती? उस समय आनन्द कहॉ चला गया? थोड़ा विचार करो आनन्द उस भोजन में नहीं था, लेकिन उसमें उसने अपना आनंद डाला, जैसे कुत्ता हडी में मज़ा समझता है लेकिन वो अपना खून ही पीता है और समझता है मुझको हडी से मज़ा आ रहा है। संसार के किसी भी पदार्थ में,विषय में आनन्द नहीं है - विषय तो जड़ है। जड़ पदार्थ में जीव को जो कुछ भी आनन्द का आभास होता है, वह अन्दर रहनेवाले चेतन के कारण होता है। जो सुख इन्द्रियों और विषयों के संयोग से होता है वह आरम्भ में अम्रत जैसा होता है, परन्तु परिणाम में विष के समान है। आनन्द तो परमात्मा ही देते हैं। आनन्द तभी होता है

जब परमात्मा के साथ हमारा सम्बन्ध होता है। अरे ईश्वर का आनन्द खोजो, आनन्द अन्दर है, बाहर से नहीं आता है। संसार के पदार्थों का स्मिरण न हो तभी सच्चा आनन्द है। जभी ब्रह्म से सम्बन्ध होता है तभी सच्चा आनन्द प्राप्त होता है। तुमको निंद्रा में आनन्द कौन देता है? बहुत बड़ा राजा भी सब बातों में सुखी है क्या? उसे रानी से आनन्द मिलता है? सब छोड़ कर जब वो सो जाता है तब उसे आनन्द मिलता है। रानी,राजाई,महल को जब वह भूल जाता है, तब उसे निंद्रा आती है, तब उसे आनन्द मिलता है। निंद्रा से एक पैसा भी मिलता नहीं, खाने को मिलता नहीं, मौज मस्ती मिलती नहीं, फिर भी तुमको निंद्रा में आनन्द क्यों आता है? निंद्रा में शांती कहाँ से मिलती है? मनुष्य को सब सुख मिले पर निंद्रा न आये तो वह पागल हो जाता है। बिस्तर पर पड़ने के बाद जिसको जगत याद आता है, उसको नींद नहीं आती है। कान को शब्द सुनाई दे तो नींद नहीं आती है। धीरे-धीरे जब वह सब भुला दे तो निंद्रा आती है। जब जगत को भुला देता है तब मन अन्तरमुख होता है। इन्द्रियां जब विषयों को छोड़ती है तभी चेतन परमात्मा के साथ सो जाती है। तुम्हारा आनन्द भी आनन्द ही है। सब कुछ छोड़ कर मनुष्य को सोने की इच्छा होती है। आनन्द भी संसार की जड़ वस्तुओं में नहीं है, आनन्द जगत में नहीं है। आनन्द जगत को भुलाने में है। जब तक मनुष्य को अन्य किसी से आनन्द मिलता है तब तक समझो दुख पीछे खड़ा है। तुम दूसरे से आनन्द लेने जाएँगे तो दुखी होंगे। निंद्रा में मन जैसा रहता है, ऐसा जाग्रत अवस्था में जहां जाओ वहां आनन्द ही है। दीपक में जब तक तेल है, तब तक वह जलता है, तेल खत्म हुआ तो दीपक शान्त। इसी प्रकार मन में संसार है तब तक मन भी चलता है, जलता है, परन्तु मन में संसार न रहे तो मन भी शान्त है।संसार को मन में से निकालना है, यही रूलानेवाला है।

परमात्मा के स्मिरण में तनमय होंगे तो मन से संसार बाहर हो जाएगा।तुम एक दम मन से संसार को निकालेंगे तो अधिक आनन्द आयेगा।पर मन से प्रभु स्मिरण करने का अभ्यास करो तो वह परमात्मामें तनमय होगा फिर मन से संसार निकल जाएगा। परमात्मा के चिन्तन से आनन्द मिलेगा। तुम परमात्मा के अंश हो, तुम जगत के नहीं, भगवान के हो। जीव ईश्वर का ही अंश है और उससे मिलने पर ही निजस्वरूप में आएगा जहाँ आनन्द ही आनन्द है।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

'संकल्प और ख्याल'

[2]

सब से पहले सुबह(2) शुरूआत हो ओम से तो ब्रहम शक्ति जागे हमेशा ओम ही चले ओम का ध्यान करना है। ओम स्वास(2) में आपे ही चलता है, चलाना नही पड़ता। स्वास उपर जाते है तो वो-ओ और स्वास जब नीचे आते है वो म है, बोलना नही पड़ता है, वो आपे ही चलता है। फिर धीरे-धीरे ओम भी खलास, ब्रहम ही हो जाएगा, ब्रहम ही ब्रहम, पूरण शांत हो जाएगा तो इतनी एकांत में बैठे, वो शांत होने का है। फिर एक भी ख्याल से करे खाली, कौन सी करे समाधी।

पहले जो NEGATIVE ख्याल आए कि मैं बीमार न हो जाए, मर न जाए, वो POSITIVE करो कि ऐसा न होगा। फिर THY WILL पर छोड़ो कि साई सोचे मैं क्यों सोचूं। THINKING IS NOT MY NATURE अशोक रहना मेरा धर्म है, फिर ख्यालों की NON STOP THOUGHT अपने आप कम हो जाती है। तू ख्याल का साखी दृष्टा बन जा, WHAT IS YOUR THOUGHT कहां से ख्याल आता है। मन हमेशा दूसरा देखता है, तो दूसरे का ही ख्याल आता है या अपने PAST का या FUTURE का तो बाहर का ही ख्याल आता है, उसे हरी अर्पित कर दो। THY WILL के DEEP THOUGHT में जाके मन को समझाओ, गुरू को लिख के दो या बताओ कि बार(2) (यह) ख्याल आता है, तो गुरू वचन देके जड़ से निकाले उस वासना को, ख्याल को जड़ से निकालना बहुत ज़रूरी है।

लगातार ओम की PRACTICE में बैठेंगे,तो माया अंदर नही आएगी, चाहे कितना भी शोर होवे। समझो एक हफता तुमने ओम का ध्यान किया, फिर उस बीच जो भी संकल्प आए बोलो मेरा की। कोई भी नाम रूप आए उस को खेंच के बाहर फेंको। मन तो कभी AMERICA कभी LONDON जाएगा, पर तुम बोलो ये भी क्यूं, यह इच्छा भी क्यूं, इस से क्या मिलेगा, एक ख्याल को नाकार करना है, एक SECOND भी सत्ता नहीं देना है। संक्लप का ज़रा भी बटन ON किया तो कर्म बन जाएगा। संक्लप को DENY करना है, चाहे घुटन होवे, रोएं-पीटें, पर उसको सता नहीं देनी है। मन कहेगा बाहर चल, ये खा, वो कर, पर उसको सत्ता नहीं देंगे, इस की WILL पूरी नहीं करेंगे। FIGHT YOUR WILL

CONTD.2.

मनोरंजन ख्यालों में नही करने देंगे। मनवा तो चोदस फिरे यह तो सिमरन नाहीं। आप विसरजन होवे तो सिमरन कहिए सोई। अभी कोई THOUGHT रहे ही नही कोई किसी की बात लाए तो बोलो चुगल-चोरी मत करो। परचिंतन एक ही बात दूसरे से क्यों करते हैं, उसी से बात करके शंका मिटाओ, सब CLEAR करके माफी मांगके अद्वैत में बैठो। वो भली गाली दे, पर वो प्रेम से अपनी विक्षेपता विचिलता दूर करो, फिर प्रेम ही प्रेम है। ख्यालों को देखते रहेंगे तो नासूर हो जाएगा। कभी भी MISUNDERSTANDING को GROW नहीं करो, नहीं तो पोधे से पेड़ बन जाएगा। अपने ख्याल को देखो, वृति ओम में लगाओ,जो THOUGHT आए बोलो मेरे काम का नहीं है, उसको ऐसा GET-OUT करो, ऐसा जवाब दो,जो फिर सताए ही नहीं। ओम में वृति लगाओ, जो एक भी ख्याल न आए, आकाशवत खाली होवे।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

'स्वभाव'

[3]

अभी अपने स्वभाव को देखो। अपने स्वभाव की हस्ती रखकर अपने स्वभाव से चलते हो। तुम स्वभाव के वश है या नहीं ? तुमको कोई कुछ भी कहे, तुम मुड़ेंगे नहीं तो झुड़ेंगे कैसे ? मैं RIGHT हूं ये कैसे समझते हैं ? मुड़ना ही मुड़ना है आत्मा में। तुम कहेंगे मैं क्या करूं, मेरा स्वभाव ऐसा है न, इसलिए मेरे स्वभाव से नहीं टकराओ। तुम फकीर हो या संत ? बात कैसे करते हो ? फकीर लोग बैठकर झगड़ा करते हैं। जैसे फकीर के यहां प्रसाद्ध बांटता है तो कोई बीच में आएगा तो उसको गुस्सा आएगा ये स्वभाव तुम्हारा निकम्मा है।

मैं ऐसा भी नहीं कहते कि स्वभाव को भाव से वस करो पर अपने को बहुत हलका रखो, ऐसा मुड़ जाओ, जो तुमको कोई बोले ऐसा नहीं ऐसा करो, तो भी बोलो ठीक है ठीक है। मैं और मेरा स्वभाव दो हो जाएं। ऐसा WEIGHTLESS हो जाएं जो कोई मेरे स्वभाव में शंका ही न रखे कि यह नहीं मुड़ेंगे। एक है RUBBER वो मुड़ जाएगा दूसरी है लकड़ी, वो नहीं मुड़ेगी। NYLON का मोझा सबसे FIT है।.मेरे को कोई पुराना न देखे। पुराना स्वभाव, पुरानी आदतें जो हम मां बाप की तरफ से लेके आए हैं, वो स्वभाव मेरा कोई न देखे। पहले वाला स्वभाव एकदम उलटा हो जाए। सब तो हमारा स्वभाव देखते हैं। स्वभाव पुराना छोड़ते नहीं बाकी दुसरी बातें छोड़ते हैं, घरवालों का फर्ज़ धर्म छोड़ते हैं, पर पुराने स्वभाव को छोड़ो। अपने को मारना, अपनी हस्ती गंवाना नहीं छोड़ते हैं। कोई हमको आकर बोलता है कि भगवान ये लोग सत्-कर्म जल्दी छोड़ते हैं पर बद कर्म नहीं छोड़ते हैं, बद कर्म छोड़ो।

प्रेमी :भगवान ये समझते थे कि स्वभाव को भाव से वस करो, पर आपने बोला हलके होकर रहो ?

भगवान : भाव से कितना वस करेंगे ? बात लम्बी हो जाएगी। ज्ञान ऐसा है कि एक कहे दूसरा माने। कोई कहता है RIGHT तरफ जाओ, हम कहेंगे हम नहीं जाएंगे। अभी समझो तुम्हारा स्वभाव तीखा है तो वो कैसे जाएगा कौन तुमको सुधारेगा। तभी मनुष्य अपने को जीतेगा जब ठंडा-२ बोलेगा,

Contd...2.

शांत करेगा अपने को। जिसका जों स्वभाव है जन्म से वो बिलकुल खराबहै। जभी वो दूसरे को सुनेगा, मुड़ेगा, तभी झुड़ेगा। अभी मैं इश्वरीय दुनिया में हूं, तू जीव की सृष्टि से नहीं छूटते हैं तो इश्वरीय सृष्टि में कैसे आऐंगे। हमेशा मुस्कराते रहो। जो अहंकार है कि मैं जानता हू,अहंकार की वजह से मनुष्य में नम्रता नहीं है, ये बात संभालनी है कि यह EGO है जो हम लोग करते हैं। अपने को देखना है। हम अपने स्वभाव को हलका नहीं कर सकेंगे पर सब योगी जो हैं हमको सुई लगाएं।

प्रेमी : मन कहता है मैं होशियार हूं ?

भगवान : तुम देखो तुम्हारे से दूसरा होशियार है, फिर दूसरा फिर तीसरा, फिर चौथा तो अपने को होशियार कैसे समझें।

प्रमी : मन झट से देख लेता है कि यह मेरे जैसा नहीं करेगा मेरे से कम है?

भगवान : कोई भी कम नहीं है, तुम कम है जो किसी को मानते नहीं है।

सब आत्मा है। तुम्हारी होशियारी की बुद्धि तुम्हें नीचे करेगी। मेरे को देखो मैं नहीं कह सकते हैं मैं ज्ञानी, मैं होशियार हूं। अभी तुमको ज्ञान स्वरूप सब सुना रहा है। इसलिए जब तक मेरा ज्ञानस्वरूप जागा नहीं तो मैं अपने को कुछ कैसे समझूं। कैसे कहें कि मैं होशियार हूं ? तुमको तो मेरे को देखकर हैरानी होनी चाहिए कि छोटे बच्चे भी गोद में आकर शांत होते हैं फिर उठने की नहीं करते , सब स्वभाव के गंद में हैं, बाहर से चमकी आंख से देखते हैं। मां के खून के बने हुए हैं, भगवान का खून नहीं लगा। मैं कहता है बड़ा नहीं मुड़े तो छोटा कहां से मुड़ेगा ? दूसरे को कम कैसे देखूं, सब मेरे मीठे प्यारे स्वरूप हैं। किसी को कम नहीं जानना, अगर अपना भला चाहते हो तो । साधसंगत से मिलकर अपने को जानो। मृग तृष्णा के जल में क्यों हैरान हो। कोई भी किस में अपना आप नहीं डालता है कि मैं क्या चाहता हूं। जो दूसरे को भी VIABRATION पहुंचे। तुम देह अध्यास में होगे तो दूसरे को क्या VIABRATION कैसे VIABRATION पहुंचेगे।

ओम सतगुरु प्रसाद

'ज्ञान के साधन'

[4]

प्रेमी : गीता अध्याय २ का ६६ श्लोक - साधन रहित पुरूष को निश्चय नही है [निश्चय आत्मिक बुद्धि नहीं होती] ?

भगवान : साधन रहित माना आज मैं ने ज्ञान सुना फिर में ज्यों का त्यों माया में ENJOY करें और कोई साधना ना करें। साधना है निरइच्छा, अद्वैत, शांत, एकांतवासी। एकांत कोई मनुष्य पसंद ना करे तो उसे ज्ञान कभी नहीं होगा। अगर साधन नहीं करेंगे तो ऐसे ही ज्ञान के उसूल बोलते रहेंगे तो उधर ही खड़े होंगे। इस उस की बात में समय तुम गंवाते हैं, परचिंतन नहीं छोड़ा इतना ज्ञान सुनके तो ये क्या है ? मंदिर में लोग जाते हैं पर वहां परचिंतन करने जाते हैं।पाण कोई बात करे हम बोलें तेरा की ? तुम संकल्प ठीक रखो तो सब ठीक हो रहा है, ठीक ही होगा। तुम ही विकल्प करते हो ये ऐसा करता है, ये मेरी बात नहीं मानता है। तुम सब शिकायत से भरे पड़े हैं, पर हम किसकी शिकायत नहीं करते हैं! कोई कुछ भी करता है चाहे मेरा विकार देखे, मेरा की ? तुम बोलते हैं इसने ऐसा बोला। तू व्यवंहार करेगा तो कोई कुछ बोलेगा। मेरा किसी के साथ व्यवंहार नहीं है, तो कोई बात नहीं है, सबको ऐसा बोलो। तूं अपना यज्ञ कर जनक जैसा बैठ, ज्योति जगेगी तो पतंगा आपे ही आयेंगे। मेरे लिये कोई पैदा ही नहीं हुआ है जो कोई कुछ करे। तुम सब पागल हैं।

प्रेमी : भगवान आज आपने ज्ञान के साधन अच्छी तरह खोले हैं ।

भगवान : ज्ञान के साधन हैं सर्व में पेखे भगवान, किसी से भी द्वैत नहीं द्वेष नहीं। परचिंतन नहीं किया घुटेला है। मेरे को अपने को साफ रखना है। उपदेश कैसे करते हैं, सफाई ही नहीं है। तुम मेरी बात समझो, मेरे लिये कोई क्यों बोलेगा ? कोई निन्दा करेगा, कम जास्ती बोलेगा, तो अच्छा है पाण मेरा पाप नाश होगा, नहीं तो पाप बढ़ेगा। कोई भी कुछ दे ही रहा है। देता है तो अच्छा है। तुम सारा दिन ऐसे रहते हैं तो ये मेरे लिये क्या बोलता है ? जैसे तू 100% ज्ञानी है। मेरे घर में कोई PASS नहीं है, CHALLENGE है। सच में ज्ञान उठायें तो सोना हो जाये। बाकी अधूरा ज्ञान LITTLE KNOWLEDGE ALWAYS DANGER ।

सत्संग करने वाले को खास बंधन है तो तुम अपने कर्म लिखो। जब से ज्ञान लिया कौन सी रहनी सहनी दिखाई। अपने को ज्ञान दे रहे हैं,

CONTD.2

तुम साधन नहीं करेगा, उपदेश करेगा। तुम्हारी रहनी में ज्ञान उतरा होवे तो बताओ। किसकी रहनी में ज्ञान उतरा है ? होशियारी है रहनी में, नहीं तो पढ़िया होवे गुनहगार.....। उसमें क्या हुआ, तुम चाहे अपनी सफाई दो। सब शास्त्र बोलते हैं पहले पॉच विषय (रस) छोड़ो पीछे बात करो। शब्द भी कौन सा बोलते हैं, तुम कैसे बेकार के ज्ञानी बने हैं। हमको दुनिया नहीं देखेगी कि उपदेश तो करते हैं चलते कैसा है ? रवाजी मनुष्य होके नहीं चलना है, ज्ञान में साधन जरूरी हैं। आत्मा हूं पर पॉच रस में कैसे रहता हूं? मायारहित कैसे होंगे ? फकीरी कैसे अख्तियार करेंगे? तुमको सब सच लगता है या मिथ्या लगता है ? क्या सच है ? किसको सब मिथ्या लगता है? ज्ञान तब होगा जब मेरी दृष्टि मिथ्या को मिथ्या करके देखे। बाकी मन किधर जायेगा ? सत् में आया तो बात ही खत्म। उल्टी बात नहीं करो तो दुनिया खत्म। धीरे२ थोड़ी होगा। तुम तो कभी भी जगत् की बात कर सकते हैं, तुमको ज्ञान नहीं आता है तो मैं द्वैत ना करूं, इच्छा ना करूं। शब्द कौन सा बोलें? तुम खुद तो TICKET से आये हो पर घरवालों को बिना TICKET के अंदर बिठाके लाये हो।

व्यंवहार में ज्ञान चाहिये। कौन सा ACTION करें ? गलत व्यंवहार का कितना TIME फल चलता है, जो कुछ किया है उसका फल निकलेगा, ACTION का REACTION निकलता है, तुमको ही फल मिलेगा, TAX भरना पड़ेगा। कभी न चैन से सोये ..... । एक शब्द भी गलत बोला तो चैन से नहीं सो सकेगा । अपने को सुधारा तो सारा जगत् सुधर जायेगा, अपने को ही बनाने का है।

प्रेमी : कोई भी कर्म करके डर लगता है कर्म ना बने ?

भगवान : कर्म ना बने तो करेगा ही नही कर्म। जिससे कर्म बने वो कैसा करेगा ? नैमेतिक कर्म शरीर के धर्म है, वो सब होते हैं, बाकी जो लगता है मैं करता हूं वो छोड़ो।

प्रेमी :भगवान, पूरा मिथ्या नहीं लगता है ?

भगवान : सत् क्या है वो लेके आओ। कोई दृश्य सत् है तो वो लेके आओ। कौन सी चीज़ सत् है, कौन सा दृश्य सत् है। आज बाप है कल मर जायेगा तो मिथ्या हो गया। सत् होवे दृश्य तो लेकर आओ ।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

'क्यों' *[5]*

प्रेमी : लिहाज़ क्यों होता है ?

भगवान : इच्छा के कारण - ये इच्छा ही लिहाज़ में लाती है । सूक्ष्म में इच्छा की बिल्ली पड़ी है । तुमको इतना पत्थर रखना पड़ेगा कि मैं आत्मा हूं तो डर लिहाज़ काहे का ? दुनिया रूठे पर मेरा भगवान न रूठे। आज समझो तुम किसी को NO करो तो वो जरूर रूठेगा पर तू तो जन्म मरण से छूटेगा ना । तुम अपना पुरूषार्थ करके जाग ।.

प्रेमी :भगवान ने जगत क्यों बनाया ? और COVER में क्यों अटके हैं ?

भगवान:जगत तुम्हारे लिये है - मेरे लिये नहीं है। तुम ENJOY करता है जगत को, हम ENJOY करते हैं भगवान में । और COVER है परीक्षा के लिये । तुम संसार में फंसते हैं हम हंसते हैं । तू फंस मैं तुमको देख के हंसूं ।

प्रेमी : धीरज़ क्यों नहीं आता ?

भगवान : क्यों कि तुम WAIT AND SEE नहीं करते - धीरज में आपे ही खेल बन जाऐगा ।

प्रेमी : सपने क्यों आते हैं ?

भगवान : क्यों कि जो हम दिन को सत् करते हैं उधर का उधर नहीं करते हैं - जो बोल- चिन्तन अंदर रह जाता है ।

प्रेमी : सत्संग में रोज दो TIME नियम से जाते हैं पर उन्नति क्यों नहीं होती इतनी ?

भगवान : क्यों कि ज्ञान सुना पर रहणी न किया और PRACTICE न करे तो कोई डाक्टरी या वकालत पढ़े और PRACTICE न करे तो उसको KNOWLEDGE होगा ?

प्रेमी : मौन क्यों नहीं होती है ?

भगवान : भरम निकलेगा तो मौन सहज में होगी । तुम अद्वैत में नहीं रहता है । खाली नही होता है, फिर मरता है । तुम्हारा किसी से मतलब नहीं है तो किसी का विकार क्यों देखता है ? आया अकेला जाएगा अकेला ।

प्रेमी : दुःख और मौत क्यों आते हैं ?

भगवान : क्यों कि कदम-कदम पर हम भगवान को नहीं देखते हैं ।

Contd..2

.... 2 ....

प्रेमी : मैं ब्रह्म स्वरूप होते हुए भी रसों में क्यों जाता हूं ?

भगवान : तुम्हारे अंदर जगत के रस पड़े हुए हैं, जो बार-बार तुमको अपनी तरफ खैंचते हैं । तू ब्रह्म स्वरूप है, पर प्रकृति को भी पूरी ताकत है जो अपने में खैंच लेती है । माया तो सूक्ष्म है ही पर ब्रह्म तो उससे भी अति सूक्ष्म है । अति सूक्ष्म को मन इन्द्रीयों से परे कर जान सकते हैं । तू मन के कहने में बार-बार आ जाता है और वो गिराने में देरी नहीं करता । तुमको किनारा क्यों नहीं पसंद है आराम के लिये ।

प्रमी : सब पापों की जड़ क्यों उगती है ?

भगवान : फल की इच्छा और अहंकार के कारण ।

प्रेमी : दुःखों और हालतों का सामना क्यों नहीं कर पाते ?

भगवान : क्यों कि तुम हिम्मत नहीं करते - किसी भी हालत दुःख से डरते हैं पर FACE करना है बोलो मेरे लिये कोई तकलीफ बनी ही नहीं है। बाहर की होशियारी को छोड़ अंदर की शक्ति को प्रगट करो। बाहर की शक्ति से हार जीत है, पर अंदर की शक्ति से जीत ही जीत है। जो अंदर की शक्ति को जगा के रखता है उसको अंदर से सच्ची निभर्यता आती है । जो अंदर की उन्नति में है उसको बाहर के दुःख लहर के समान हो जाऐंगे। तुम को सुख बुद्धि है तो दुख भी भासता है ।

प्रेमी : ज्ञान में आगे बढ़ने के लिये तन-मन-धन रूकावट क्यों डालते हैं?

भगवान : क्यों कि तुम आत्म उन्नति, आत्म विचार, आत्म जागृति में नहीं हैं। ब्रह्म ज्ञान को कोई प्यार करे तो आदि, व्यादि, उपादि तीनों रोग चले जाऐंगे।

प्रेमी : भगवान मान में खुशी और अपमान में रंज क्यों होता है ?

भगवान : क्यों कि तू कीर्ति चाहता है। कीर्ति किसकी होनी चाहिये? निराकार की या तू पांच तत्व के गंद के नालायक टोकरे की ?

प्रेमी : भीतर के भगवान का दर्शन क्यों नहीं होता ?

भगवान : क्यों कि तुमको आदत है VISIBLE देखने की । वो तो अति सूक्ष्म ते सूक्ष्म है। जभी अपने को मिटाऐगा - ज़र्रे-ज़र्रे अपने को मिटाऐगा - मैं ना, है ही भगवान । तो उसके दर्शन ज़रूर होगा । ये LESSON है मैं ना रहू, रहे ही भगवान ।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

'निज-स्वरूप'

[6]

प्रेमी :निज स्वरूप चेतन स्वरूप कैसे है ?

भगवान : ज्ञान जो है ना वो प्रेम पैदा करता है। चेतन स्वरूप है जो आदिमी में है वो चेतन है बाकी जो है वो जड़ है। ना जड़ है आत्मा ना चेतन है,आत्मा तो साक्षी है, पर जो ज्ञान है वो प्रेम अन्दर पैदा करेगा। ज्ञान के सिवाय कोई समझो देह से प्यार करता है तो वो समझो मोह करेगा, प्यार नहीं करेगा। प्यार तभी होगा जभी हम REALISE करेंगे कि मोह वाले से क्या होगा? सबको प्यार क्यों नहीं। मोह वाले से क्या मिलेगा ।

प्रेमी : भगवान निज स्वरूप क्या है ?

भगवान : निज स्वरूप है ब्रह्म का, परमात्मा का, उसमें माया MIX नहीं है। ये ईश्वर सृष्टि है ना, तो ईश्वर माया सहित है ना। माया भी है और जो ब्रह्म है वो अकेला है जो आत्मा है सो एक है। जो सबमें आत्मा देखे वो परमात्मा है।

प्रेमी : निज स्वरूप को जानने की चेष्टा कौन करता है ?

भगवान : वो तो है निज स्वरूप पर भूल से आ गया है देह में, फिर वो बोलता है कि मेरे को आनन्द कहाँ है, शांति कहाँ है, फिर निज स्वरूप को ही ढूंढ़ता है। जो जीव भटक रहा है कई जन्मों से - कई जन्मों से भटकता था, अभी ये तुम्हारे लेखे। अभी इस जन्म में तुम्हारे को खोज है कि कौन सी चीज़ प्राप्त करें, जो हम एक रस रहें। एक रस आत्मा में रहते हैं, ब्रह्म में रहते हैं, सत् में रहते हैं। एक रस दुनिया में कोई नही रहता है। दुनिया में तीन गुण में सब बह जाते हैं। कभी सतो गुण, कभी तमो गुण, कभी रजो। कभी कैसा२, पर सत् को हम पकड़ेंगे तो कभी बह नही जायेंगे।

प्रेमी : जीव भाव ही खोजता है ?

भगवान : हाँ, जीव भाव। तौबा है, इतने जो भी दुख हैं, सब जीव भाव को लगते हैं। चाहे बीमारी है, चाहे मन का आलस है, चाहे राग-द्वेष है, चाहे द्वैत है सब जीव भाव को पकड़ता है। जीव पता नही ऐसा है जो तू भी नहीं जान सकेगा। हमने जभी ज्ञान सुना तो स्थूल, कारण, सुक्ष्म का तीन

CONT02

शरीर है, तो स्थूल से हमारा नाता नहीं था, किससे भी। सुक्ष्म से मन का भी नाता छोड़ा, मेरा कोई है नहीं तो मैं मन किसमें रखूं पर CONSCIOUS में समझो इसको थकान हुई तो चिचलायेगा, तो हम जभी सत् में होगा तभी भूल पकड़ेगा। सत् में होगा तो UNCONSCIOUS को भी पकड़ेगा। नींद में सुनेंगे पर जभी हम FRESH हो जायेंगे तो चीचलाना छोड़ देगा। वो कई दिन से अभी छूट गया है। वो उस TIME मालूम पड़ता है कि अन्दर कौन चिचलाता है कि मैं थका हूं। हम जानते थे उस TIME.

प्रेमी : भगवान ये अच्छा लगा कि UNCONSCIOUS का चिचलाना छूट गया ?

भगवान :नही मालूम पड़ता था कि ये थकान काहे की है या कौन सी बात है जो ये अन्दर सुक्ष्म में सुक्ष्म ये चिंचलाना है। पर कई दिनों से कोई बात ही नही है। ऐसा SILENCE की नींद आती है जैसे मैं हूं ही नहीं। जैसे छोटा बच्चा सोता है ऐसे में भी सोते हैं। पर जभी इसको कुछ होता है तो वो ही (जीव भाव) कीकाराता है, ना कि मैं की कीकराता हूं। मैं अलग हूं ये समझना, जो सत् मैं हूं सो अलग हूं, उसको जानने वाला मैं हूं। शरीर को, मन को, UNCONSIOUS को मैं जानने वाला मैं हूं। पर जो वो जानने वाला सो जायेगा तो फिर कौन जानेगा, फिर भूल कौन पकड़ेगा? सत् में होगा तो बोलेगा - अभी मेरा मन कहाँ गया? मेरी छुट्टी के सिवाय क्यों गया? सब सत् से होगा। पर जे सत् में मैं नहीं हूं तो असत् मेरे को भुलाके कुएँ में डाल देगा। एक है सत्, दूसरा है असत्। जे सत् में मै नहीं हूं तो असत् क्या करेगा। जैसे कोई भी हमारा PATIENT है, HOSPITAL जाता है, जल्दी ठीक होता है तो DOCTOR बोलता है कि इतना जल्दी कैसे ठीक हो गया। तो बोलता है - इसका मन जो है वो भगवान में है, तो ये देह से न्यारा है, देह में अटकते नहीं है तो बीमारी उतर जाती है। इससे (देह से) जो CONNECTION नही रखेंगे तो जन्दी IMPROVEMENT हो जायेगी । जे सारा दिन पिजँरे में फँस जायेगा जैसे पंक्षी पिजँरे में फँस गया है तो वो दुख जल्दी आता है, ये हम बीमारी की बात करते हैं, पर राग-द्वेष हम अपनी WILL से छोड़ेंगे। आत्मा को, सत् को जानेगा तभी राग-द्वेष जायेगा, मोह ममता जायेगा कि किससे मोह करें, किससे नफरत करें, किससे प्यार करें, सब तो मैं हूं, सबके हृदय में मैं गाता हूं, मैं रहता हूं तो मैं किसमें मन रखूं।

CONTD.

ABC में मन रखके परेशान थोड़ी होगा। पर जे हम सत् में मन रखेगा तो सत् से हमको प्यार मिलेगा। सत् वाले को प्यार मिलेगा, असत् वाले को रंग-द्वेष मिलेगा तो दुखी होके मरेगा। तीन शरीर का तू दृष्टा है, स्थूल, सुक्ष्म, कारण पर जे तू इसको नहीं ANALYSE करता है कि मैं अन्दर वाले को भी, शरीर को भी जानूं, मन को भी जानूं, मैं जाननेवाला हूं, तो मैं जानूं ना इसको।

प्रेमी : मैं जानने वाला हूं तो निज स्वरूप को ही जानना है।

भगवान : मैं ने बोला जो जानता है, वो जो परेशान है, सो जायेगा जीव। मैं ने आज जीव नाम रखा है, मन नाम नही रखा है, क्यों कि जीव और जगत सत् है। अभी जो तुम्हारा बेटा है, जीव है ना, उधर तो तुम्हारा मन है तो क्यो ?

प्रेमी : सोता कौन है ? KNOWER तो सोता नहीं है ?

भगवान : जीव थोड़ी सोता है ? KNOWER नहीं सोता है पर जभी ये शरीर सोता है तो KNOWER उसके अंदर से सुजागी देता है कि अभी तू कहाँ है, सुजागी मिलती है। अज्ञानी का खाली जीव जागता है, उसका KNOWER नहीं जागता है, वो तो पता नहीं कहाँ गाडी लेकर जायेगा। तुम बताओ अभी अज्ञानी थे तो तूम्हारे पास मन था, तो मन कहाँ जाता था ?

प्रेमी :आज ये अच्छा लगा कि KNOWER अगर सुजाग है तो UNCONSCIOUS का चिचलाना भी असल लगता है।

भगवान : मज़ा आता है बहुत कि ये जानता है कि इसको तकलीफ है, जो थकान होती है, किसको होती है ? जानता फिर कौन है ?

प्रेमी : ज्ञान स्वरूप तो आत्मा है फिर कौन है जो सपना देखता है ?

भगवान : सपना देखता है जो जीव जानता है। सपना वो देखेगा क्योंकि वो नामरूप में है। समझो हम नाम रूप में नहीं है तो हमको कोई संकल्प भी नही है। ऐसी गहरी नींद है जैसे हम ना सोते हैं, ना उठते हैं। वो गहरी नींद आनी चाहिए, जैसे दिन को भी जगत कहाँ है ?

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद 1985

'मोत पर'

[7]

जहाँ पर मौत हुई थी, भगवान एक दिन वहाँ चले और वाणी चली:-

ये तुम रोते हो ये भी चँचलता है, भगवान निराकार हमको देख रहा है। हे अर्जुन अशोक रहना तेरा धर्म है। जो SCENE होनी है, वो हो ही जाती है, न होने वाली बात नहीं होती है। अपना ही मन दुश्मन है, मन पाप कराता है, चोरी, अहंकार कराता है, ये सब DUALITY का ज्ञान है और अपना मन पहले दुश्मन है। कोई बुरा नहीं है भले मन के वास्ते। हम समझो भलाई में है तो कोई बुरा नहीं है। जो कर्ता है सो भरता है, हम क्यों किसको बुरा देखें। जब तक देह अध्यास है, देह अध्यासी चुप चाप बैठे तो भी कुत्ता बिल्ला मारता है। जब तक मन को आसन मिले जैसे राजा को आसन चाहिए। कोई भी मनुष्य कर्म कर लेता है, पर जानता नहीं है कि क्या फल मिलेगा। देखो कृष्ण को तीर लगा, CHRIST का मौत कैसे हुआ ये क्यूं? भावी है। कोई कर्म का फल कभी मिलता है, कोई कर्म का फल कभी, पर LIFE CONTINUOUS है। अर्जुन को भगवान बोलते हैं कोई कर्म का कभी फल मिलता है, कोई कर्म का कभी, धरती धर्मक्षेत्र है। सब की JUDGEMENT होगी जब इतने पैगम्बर से नहीं टली। दुनिया किसको सहती नहीं है। लोग हर बात में कुछ न कुछ बोलते हैं। तुम भी बोलेंगे इसने कुछ किया होगा, उसने कुछ किया होगा। कोई बुरा नहीं है.... हम लोग भलाई में रहेंगे तो कोई बुरा नहीं है। कोई बुराई करेगा फिर भी तो पछताएगा। उसको भी आराम नहीं आएगा। सब को जाने का है दुनिया से, सब को मरने का है। तुम जो द्वेत द्वेष करते हैं तो दुख तो सब के लिए है। एक आदमी को किसीने छुरा लगाया तो आदमी अभी तक उलझा पड़ा है। दुश्मनी की नहीं और POLICE आयी नहीं। POLICE आयी तो फिर बोला किसी की भी भूल नहीं है. हम हमेशा थोड़ी रहेंगे। सो सुखिया जिस नाम आधार। हम जुदा किसको भी नहीं देखेंगे कि ये बुरा है या अच्छा है? नीच है या उंच हैं ? सब भगवान का रूप है, प्रेम देवता 'अँदर है पर प्रेम देवता तभी प्रगट होता है जब गुरू कोई वचन बोले तो हमारा हृदय भीगे। सब जगह सतसंग में स्त्रीयां जास्ती पुरूष कम आते हैं। ये क्यों? सारे दिन में सबको ही कोई न कोई टाईम भगवान को देना ही चाहिए।

CONTD.. 2.

DUALITY में कर्म करेंगे तो फल ज़रूर मिलेगा। धरती कर्मक्षेत्र है। आसमान में कर्म नहीं है। अर्जुन पूछता है 'न चाहते हुए भी कर्म क्यों हो जाता है' तो अँदर UNCONCIOUS में इच्छा पड़ी हुई है वो निकल आती है। आत्मा सुतह सिद्ध है। हम दिल से सब को माफ कर दे तो भगवान भी माफ कर देगा।

दृष्टांत :- नौकर को सेठ ने माफ नहीं किया तो नौकर ने कहा तो खुदा तेरे को माफ कैसे करेगा? जब सुख देखते हैं तो नशे में आ जाते हैं, पर सदा न संग सहेलियाँ सदा न काला कैस ..... । ईश्वरी सुख कभी नाश नहीं होता। सब टाईम ईश्वर को हाज़िर नाज़िर देखो, भगवान तेरी रज़ा में राज़ी रहेंगे। भगवान से जो हुकुम आया है सिर माथे पर रखेंगे, नहीं तो दुखी होना पड़ेगा। आज से किसको भी बुरा नहीं देखना। बुरा देखेंगे तो विकार होगा, समदृष्टि करके देखो, उससे कोई भी विकार नहीं होगा। सबको RETURN TICKET है कोई किधर उतड़ता है, कोई किधर। तुम वासना से पकड़ते हैं तो प्राणी को कष्ट देते हैं। हमको हमेशा भगवान की रज़ा में राज़ी रहना है। तुम हमेशा अपनी अच्छाई रखना। दूसरे को GUILTY नहीं समझना। धरती है कुरूक्षेत्र। कोई लड़ाई में मर जाता है, कोई बीमारी में, कोई कैसे। RETURN TICKET सबको है। संतोष में तुम नहीं रहते हैं, सुख में सुखी, दुख में दुखी, वो इन्सान नहीं है। हम इस धरती पर ही रहते हैं, इसलिए सन्यासी किनारा करके जाते हैं। हमारा सन्यास ग्रहस्थ में है। हमेशा के लिए कुछ नहीं है। एक सत् परमात्मा है! अँदर में शुद्ध मन रखना। REVENGE IS A DAYS' PLEASURE, FORGIVENESS IS EVERLASTING HAPPINESS. आप समझो बदला लेने की करेंगे, उसको क्या होगा। REVENGE लेंगे वो आपको जुदा फल मिलेगा। दुश्मन माना अपना मन दुश्मन, इस जीव का ना कोई मित्र है ना कोई दुश्मन। अपना ही तू मित्र है, अपना ही दुश्मन है जे तू आत्मा में नहीं है। तुम OWNSELF आत्मा ही देखो तो दुख सुख रहेगा ही नहीं। जगत है मिथ्या ILLUSION, मन का भर्म। आप दूसरे को दुश्मन मानते हैं, हम अपने मन को ही दुश्मन मानते हैं।

CONTD.3.

प्रेमी : भगवान INNOCENT लोगों को भगवान क्यों लेके जाता है ? ऐसा क्यों होता है ?

भगवान :: INNOCENT कौन है ? मनुष्य कब निर्दोष है ? कौन सा मनुष्य है जो निर्दोष है ? PERFECT कौन है ? पत्थर लगाने वालों को CHRIST ने कहा जो निर्दोष होवे वो ही इस दोषी स्त्री को पत्थर लगाए। तो सबके हाथ नीचे हो गए। CHRIST तो पाण खुद निर्दोष था तो भी उसके उपर इतनी तकलीफ क्यों आयी। महात्मा गॉधी को गोली लगाई, मनसूर को फॉसी पर चड़ाया, स्वामी दयानंद को शीशा कूटके पिलाया, कृष्ण को तीर लगा, सब पैगम्बर को इतनी तकलीफ आयी। मनुष्य तो भूलेला है ही।

प्रेमी : भगवान सबको RETURN TICKET है पर पॉच भाई SAME STATION दिल्ली की TICKET लेते हैं एक भाई को कोई ज़बरदस्ती AHEMDABAD पर उठाके जाते हैं, तो चार को तो दुख होगा ?

भगवान : वो भी हर एक के कर्म का फल अपना है। पॉच भाई है और पॉचों की अपनी WILL है, पॉचों के अपने २ कर्म हैं। अपनी २ बात है। माउ जणींदी पुटड़ा, भाग न दींदी वंडु। सब बच्चे की अपनी २ बात हैं। तुम भाई कैसे बने ? जब सब एक ही परम पिता परमात्मा से आए हैं।

प्रेमी :भगवान कैसे मालूम पड़े ४ वर्ष की लड़की का MURDER होवे तो उसने कर्म कीया ?

भगवान : हमने पहले ही बोला LIFE CONTINUOUS है। कोई कर्म का फल कभी, कोई का कभी मिलता है। घास तीन दिन में, पपीता तीन साल में, आम पॉच साल में। आप हर चीज़ को बोलो एक महीने में बन जाए तो बनेगी ? सब चीज़ का समय है। ऐसे कर्म का फल भी कोई किस जन्म में, कोई किस जन्म में मिलता है।

तीन भजन चले (1) तेरे हाथ में ..... (2) मन तू जोत स्वरूप है ..... (3) ओम है जीवन .....

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

'अद्वेत मत पर'

[8]

तुम अपने को मिटाते नहीं जो आत्मा की नेष्ठा होवे। दूसरे आदमी को मिटाते हैं कि ये मेरे से सीधा चले। COUNT करो कितने आदमी को बोलेंगे मेरे से सीधा चलो। मैली ऑख तुम्हारी है मैं तुम्हारे लिए सारे जग को सीधा बना दूं, पर ऑख तुम्हारी मैली रहेगी। AN EVIL EYE SEE NO GOD. तुमको अपनी ऑख का OPERATION कराना है। कोई भी मेरे को किसी योगी की निन्दा शिकायत करेगा मैं उसको वर श्राप दे देगा, मैं उसको ज़हर देके मार देगा कि इतनी मेरी महनत लिया है। दादा भगवान रोज़ बोलते हैं दूसरा देखे दूसरे का बेटा। किसको भी तुम सुधार नहीं सकेंगे। अगर अपने को वस नहीं करेगा तो दूसरे को क्या वस करेंगे। बेशर्म है जो दूसरे की बात करते हैं। तुम अपने को वस कर सकते हैं ? कभी भी अपनी ही गलती को देखकर उसको बनाओ। दूसरा भले बोले कि मेरे विकार बताओ। तुम बोलो ४०४ विकार मेरे में है तो ४०५ कैसे तुम्हारा देखूं? कस तो मेरे को लगेगी ना? मैं अपनी मौत कैसे करूं? अपने को कस कौन लगायेगा? हमेशा ऑख बाहर देखती है, पर तीजा नेत्र खोलो तो अपने में देखेगा। चम ही ऑख बाहर देखती है। ज्ञान नेत्र खोल। पहिंजे दिल में पसु रघुवीर तूं। हमेशा गुरू को देखो कैसे खाता है, देखता है, चलता है। सतगुरू का आदर्श हमेशा सामने रखो वो ही तुम्हारे लिए आदर्श है, बाकी सारी दुनिया DEAD BODY है। DEAD है तो तुम क्या देखेंगे? मुर्दे के क्रिया कर्म देखते हैं क्या, जो जगत के आदिमी को जीता देखते हैं। आत्म जागृति वाला सुजाग है। आगे हम मुर्दा थे,गुरू ने आकर प्राण डाला, बोला मरके जीना। गुरू ने बोला मैं प्राण डालता हूं, तू EGO नहीं करना। २४ घंटा गुरू में मन होवे तो दूसरा दिखेगा ही नहीं। गुरू के इशारे को समझेंगे तो और से बात नहीं करनी पड़ेगी। गुरू का इशारा नहीं समझते हैं तो इस उस से बात करते हैं। सब SPARROW हैं।

तुम सारा दिन देखो एकरस हैं। ये PRACTICE करो। दुख में तुम्हारी शकल दुखी हो जाती है, सुख में सुखी हो जाती है। एक संत है जो सबको हँसाता है, ये ART है, दूसरा संत इतना शान्त, मौन में बैठता है, इतना गॅभीर जो उसका शरीर नहीं हिलता है। वाणी चलाता है तो उसका नाखून भी नहीं हिलता है,ऐसी स्थिति बनाओ,ऐसी स्थिरता बनाओ।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

'प्रेम की महिमा'

[9]

प्रेम की महिमा सबने कही पर जानी और पहचानी नहीं। क्यूं कि मोह और प्रेम MIX है तो प्रेम की खबर नहीं है, प्रेम बोलते किसको है? जो निष्काम प्रेम है वो चलता चले पर टूटेगा नहीं। तुमने निष्काम प्रेम किया होगा तो स्वार्थ नहीं होगा, जे स्वार्थ नहीं होगा तो तुम्हारे से कोई छुट भी नहीं सकेगा। बिना स्वार्थ के कोई भी फल की इच्छा रहित सच्चा प्रेम है।

आज तुम्हारा बेटा DOCTOR है, तुम बोलेंगे अच्छा हुआ - वकील है तो बोलेंगे काम आयेगा - पर जो DEGREE है, तो तुच्छ है। पर प्रेम से पैसा देकर बाहर से काम लेगा। सब अपने से शुरू करना है और अपने से पूछना है। तुमको अन्दर ही जवाब मिलेगा। स्वार्थ में किसी से भी बुराई होगी। जभी मोह के दलदल से निकलेगा, तभी उसकी बुद्धि साफ होगी और सर्व में आत्मा देखकर प्रेम हो जायेगा ।

हम अगर भगवान के होंगे तो कोई नहीं बोलेगा, ये फर्ज करो, ये DUTY करो, वो हमको समझते हैं कि ये गुरू के हैं जभी हमको भगवान का समझते हैं तो हमारा फर्ज DUTY खुद ही छुड़ायेंगे, कहेंगे गुरू के पास जा, क्यों कि देखते हैं भगवान से इसका कितना प्यार है।

कब तक हम आधा भगवान की तरफ, आधा दुनिया की तरफ रहेंगे, तो दोनो तरफ जूते खाने पड़ेंगे। दूसरे को नहीं कहो मुझ को इज्ज़त नहीं दिया, जो खुद इज्ज़त के लायक है उसको इज्ज़त मिली पड़ी है। उसको ये इच्छा नहीं होगी कि ये मुझको आगे बढ़ाये। तुम्हारा त्याग, तुम्हारा वैराग तुमको आगे बढ़ायेगा।

तुम किसको भी सिखाने वाले मत बनो, इसमें हमेशा द्वैत बना रहेगा। कोई भी देखो तो समझो मैं अपने को प्यार कर रहा हूं ।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

'ZERO'

[10]

बड़ी से बड़ी हालत को हम ZERO बना सकते हैं ख्याल से। कुछ मन ने देखा नहीं और ख्याल किया नहीं, ये कैसा होगा जैसे कि ये मनुष्य खुद ही करनेवाला है। गदाराम समझता है जैसे मेरे को ही करना है, पर उससे होता नहीं है। PAINTER जब बोलेगा मैं नहीं करता हूं तो उसकी PAINTING अच्छी होगी। बनके रहेगा तो कुछ नहीं होगा। एक भरे हुए कटोरे में तिनका डालो या फूल डालो तो पानी नहीं गिरेगा, ऐसे WEIGHTLESS होकर हमको दुनिया में रहने का है।

मेरे से ये पाण और उत्तम करेगा ऐसा सॅकल्प हम क्यों नहीं करते हैं। मेरे जैसा ये नहीं करेगा ये क्यों बोलते हैं। मनुष्य समझता है मेरे जैसा न हुआ न होगा। माना मैं ही दुनिया में अकल वाला हूं, काबिल हूं, होशियार हूं। मैं से सारी खराबी है, हानी है। मैं से COURT है, HOSPITAL है। भगवान उसको दिखाता है तू नहीं भी होगा तो भी दुनिया चलती रहेगी।

जो भी तीर्थ यात्रा बनी है वो इसलिए है कि थोड़ी दूर हटके देखना चाहिए कि मेरे सिवाय क्या-२ होता है। नहीं तो मनुष्य वहां ही विष्टा का कीड़ा होके रहता है। सब ग्रहस्थ में विष्टा का कीड़ा है। तो कहॉ से भी थोड़ा हटेगा तो पाण दूसरे को POWER मिलेगा कि हम भी बन सकते हैं, हम भी कर सकते हैं। तू बना तो कोई बड़ी बात नहीं है, पर तेरे से कोई नहीं बना तो तेरी अकल क्या काम की। मन से सब ठगी निकालो, तुम समझते हैं मैं ही दुनिया में हूं, मेरी ही दुनिया है। छोटा कहीं पर भी आज तक बड़ा नहीं बन सका है क्यों कि बड़ा अपने को छोटा नहीं बनाता है। सब को अपनी आत्मा दखो कि सब मर [illegible] सब जगह है। भगवान VISI BLE नहा है तो भी हर हृदय में विराजमान है। तुमको आदत है VISIBLE देखने की, वो अति सूक्ष्म से सूक्ष्म है तभी तो भगवान का दर्शन आज तक नहीं हुआ है। जो अपने को मिटाएगा उसको ज़रूर दर्शन होगा। ज़र्रे-२ अपने को मिटाने का ही सबक है। जहॉ-जहॉ मन हस्ती दिखाए, वहॉ-वहॉ उसको झूठा करें। फिर सब देखे ये ज़र्रे-२ कैसे मिटता है। मैं ना रहूं, रहे ही भगवान।

ओम

'सच्ची खबर '

[11]

हमको सच्ची खबर कौन सी रखनी है ? अपने से पूछो ? दूसरे के विकार देखते हैं, दूसरे क विकार COUNT किया तो अपनी खबर भूल जाएगी। जैसे बालाजी पंडित है उसको अपनी खबर नहीं है। ब्रह्म देखा सबमें, पर अपने को ब्रह्म नहीं देखा, तो उसको झुकना पड़ा राजा को। तुमको किधर भी झुकना ना पड़े। ऐसा झुको गुरू को, ऐसा मिटो जो कहाँ भी मार खानी ना पड़े। सबसे जीता तू अपने से हारा। क्यों बोला है मन जीते जग जीत। अपने मन पर जीत पहनी नहीं, गया दूसरे का मरज़ देखने। ये CANCER की बीमारी है। तुमको लानत है जीने को, खाने को, पीने को, उठने को, बैठने को, जो अपने को प्यार किया नहीं, दूसरे को JUDGE करते हैं। जब भूलीं तूं आप को तब भासे संसार। दस पागल नहाने को गये, अपने को नहीं गिना तो जाके हाय हाय किया, 'अरे एक डूब गया'२ वो था खुद। खुदी गई तो खुद भया। आपे समर्थ। OWNSELF। आप नचीने भ्रम में भूले ।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

'युक्ति से मुक्ति'

[12]

युक्ति से मुक्ति है, पर वो कौनसी युक्ति है? केवल आत्मा बोलने की नहीं है, पर शरीर को भी देखना है, शरीर में कौनसी कर्मा है, वो कर्मो भी पूरी करनी है। शरीर के साथ भी दया न करो। EXCESS में कोई भी वस्तू की ज़रूरत नहीं है। न EMOTION की न रोष की। नेमतिक क्रिया है वो REALITY मे देखना है कि सुबह से लेकर कौन सा प्यार रखा, किस की भलाई सोची? या अपने ही प्रोग्राम बनाए कि मैं ऐसा सुख लूंगा, ऐसा करूंगा।घरवाले भी सोचेंगे कि ये अपने ही सुख में है।किसी की अधिक COMPANY करेंगे तो अधिक मोह बढ़ेगा।जहॉ जहॉ मन अधिक प्रीति रखे वहॉ से उसको मोड़ना। EXCESS में लेके गए तो मन कहॉ भी लेके जायेगा। सारे दिन में कौनसी सुख बुद्धि रखूं, मेरे को सबकी भलाई के लिए रचा गया है, न कि अपने सुख के लिये रचा गया है। पर तुमको सब रस याद है। मैं माया पति होकर सब रस लूंगा। ज्ञानी सब रस लेकर भी कोई रस नही लेता है। पर अन्दर में CONTROL में है। किसी भी बात की इच्छा नहीं करता है,तो प्रभू आपे ही उसकी सम्भाल करता है। कहते हैं निष्कामी भगत का मेरे उपर भार है। सकामी को थोड़ा बहुत देकर दो चार खिलौने देकर खुश करता हूं। जैसे मॉ बच्चे को खिलौने देकर खुद घूमकर आती है,ऐसे ही भगवान सकामी को दो चार खिलौना देकर गुम हो जाता है। निष्कामी के लिये भगवान को सारा दिन चिंता है, कि ये अपना नहीं सोचता है, तो मेरे को उसके लिये सोचना है। हम हद के अँदर अपने को रखते हैं पर बेहद का मज़ा नहीं लेते हैं। मैं सृष्टि का FAMILY MEMBER होके रहूं तो मुझे सृष्टि अँश मात्र लगती है क्यूं कि जहॉ देखता हूं पॉच तत्व है, तो एक ही अँश हो गया।

गीता भी कहती है कि अँशमात्र सृष्टि में सुख है।FULL आनन्द को छोड़के हम टके टके के सुख में पड़ें हैं। उसको तृप्ति कभी नहीं आएगी, कई जन्म में भी नही आएगी। इच्छा से सुख लेना माना अपने को बेच देना। बिका हुआ मनुष्य गुलाम होता है।हमको शरीर रूपी जेल से निकलना है तो विशालता का मज़ा मिलेगा। सब दुनिया में कस खा कर मरते हैं।संतन माखन खाइया छाछ पीये संसार। तुमको पुरूषार्थ नही करना है तो छाछ पीयोगे।संसार कुछ देता भी नहीं है फिर भी हम पकड़ने की कोशिश करते हैं।पूरी माया खडी है पकड़ने के लिये।इसीलिये सुजागी रखो।

ओम

ओम सतगुरू अजाद

[13]

'Knower'

Knower को जानना है तो हमको जानना है - सच क्या है झूठ क्या है ? है ही Knower, तू नहीं है। अपनी हस्ति गुम करो जब हस्ति गुम करेंगे तब ज्ञानस्वरूप जागेगा। जे हस्ति वाला है तो Knower सोया पड़ा है। जिसका Knower सोया पडा है वो क्या करेगा किसका Knower सुजाग है, वही प्रेम कर सकेगा, सबको खिलायेगा,पिलायेगा, घुमायेगा । इधर खास Knower की बात है सबको वही चलाता है।

पहले Total माया को पीछे करना है। सबसे पहले Knower को जानना है - यह मेरे को जाने - मैं इसको जानूं । यह तो होगा ही - मरने तक घरवाले होंगे - जगतवाले होंगे - पर दुखों में - बीमारी में तुम को ज्ञानस्वरूप भूल जायेगा - बाकी सब याद रहेगा। ऐसे आत्मा परमात्मा तुमको नहीं दिखाई देगा - Knower नहीं जागेगा - ज्ञानस्वरूप भूला तो शरीर कैसे चलेगा ? पहले जगत पीछे करो। जगत को कितना धुएँ के पहाड़ जैसे पीछे किया है - मिथ्या जाना है कि अभी कोई अच्छा बुरा नहीं है - रागद्वेष नहीं है - तू मैं नहीं है - सब भेद गया, एक Knower अकेला है। बाकी द्वैत है तो दूसरा दिखेगा, पर Oneness, Sameness में रहेंगे तो सबसे अनोखा प्यार है। मैं खुद आशिक हूं, खुद माशूक हूं । ज्ञानस्वरूप मेरे साथ है। मेरे अंश में सृष्टि है - सारी सृष्टि मेरे हाथ में है भाग्य भी मेरे हाथ में है । सारी सृष्टि को मैं हाथ में लेकर चलाता हूं । जगत है ही नहीं दुख है ही नहीं - तो दुःख कहां से लेकर आया ? ये हुआ जगत मेरे अंश में है।एक बात जरूर देखना है - जग में सच्चा दोस्त नहीं मिलेगा - है ही नहीं, भगवान के सिवाय। तेरा किसी से संग नहीं है - इसीलिए तू शुद है - Knower ही तुमको चलाता है, खिलाता है।मूल तत्व को पकरना चाहिए । कौनसी हालत है जो हमेशा रहेगी ? दुख-सुख रहेगा ही रहेगा - उस पर एक मिनट भी गंवाना बेकार है। ये संसार भी हमेशा होगा ही होगा। मेरे (भगवान जो अन्दर है) से तो कोई मिला ही नही है-पर मन से मिलते हो। बोलो मैं निराकार हूं-आदि से हूं ही हूं। ज्ञान-स्वरूप को जानना है। दुनिया तुम्हारा घर पूछती है, पर ज्ञानस्वरूप को कोई नहीं पूछेगा। अपनी प्रलय करनी है-मेरे को कुछ नहीं चाहिये। अपना आप हमको भूल जाये। तुम सब सच बोलो तुमने Knower को पकड़ा है -

CONTD.2

ज्ञानस्वरूप में चुप है-शांत है-अन्दरवाला Knower सच्चा है, जो बोलता है तू गलत है-तुम्हारी ये कमी है-पर हम अपनी कमी कैसे Count करते हैं? जभी केवल सच है तो बाकी कुछ नहीं है। सब सपने के पदार्थ है। गुरू का ज्ञान अमृत ज्ञान है। जो दूसरा भी अमृत हो जाये। गुरू के शब्द के विचार में सुख है। Knower को पकड़ने के सिवाय शांति नहीं आयेगी। आत्म घाती महापापी। सब आत्मा को भूल के देह में कितना प्रपंच करते हैं ?

हम अपने कर्मों से भगवान से दूर हैं-पर भगवान ने किसी को दूर नहीं किया। न करता है न करेगा, बल्कि भगवान तो दोनों बाहें फैलाकर खड़े हैं कि आओ ।

हमको मना है किसी के उपर दया करना-दया करेंगे तो Wrong कर्म हो जायेंगे। न जाने भगवान ने कौन सा फल रचा है? ये मनुष्य की कहानी है। पर मनुष्य अपने को जानता नही है-और दोष ही देता है। सदा ही प्रकृति में खिलखिलाकर रहना चाहिए। जिससे पुरूष परमात्मा देखे कि ये दुख-सुख में कितना सम है। हमको दुख सुख आते हैं आज़माने के लिए-ना कि मिटाने के लिए। दुख सुख से डरो नहीं। हिम्मत रखकर चलेंगे तो पहाड़ जैसा दुख भी छोटा हो जायेगा। दुख, सुखों की सुन्दरता है सुखों को वारकर फेंक दो दुखों पर। कितने भी दुख आये अपने को कमजोर ना करो। कमजोरी मौत है-अन्दर वाले की सुनो-कितना धीरज में है-शान्त है-मौन है-केवल इशारा करता है।

Life में कभी खफा नहीं होना-जिन्दगी में कभी खफा नहीं होना। अपने को बोलो-ये गुजर जायेगा-आखिर सब गुजर जायेगा।

जो सचमुच में आत्माकार है वो दूसरों के लिए कुछ नहीं कहेगा, कहेगा वह भी 'मैं ही तो हूं '।अपनी निन्दा कैसे करूं? कम ज्यादा क्यों देखें सब मेरे ही रूप है। हम राग द्वेष में जलते मरते हैं। दूध की परवाह करते हैं कि जल ना जाये फट ना जाये-पर खून की परवाह नही करते हैं कि ये जल ना जाये। काहे के लिये क्रोध करते हैं ? दूध तो मिल जायेगा,पर खून जल जायेगा तो कैसे मिलेगा? आज से बोलो हम क्रोध नहीं करेंगे। न जलना, न मरना, अपने को सरल रखना है। भगवान गीता में कहते हैं 'एक ही आत्मा सबमें देखो '। तो तू लड़नेवाला कौन है ? किससे लड़ता है ?

CONTD.3.

सब तू ही तो है। आज से बोलो-एक से भी मेरा द्वेष नहीं है तो मेरा प्रेम ही है। कोई भी होवे-अपना, पराया-पड़ौसी, चोर चण्डाल मेरा द्वेष नही है सबसे प्रेम है - प्रेम प्रेम प्रेम ।

एक और बोलता है सब भगवान का है-पर जानते नही है। सारी सृष्टि का मालिक मैं हूं। यह ज्ञान है शांत स्वरूप का। ज्ञान है रोशनी ज्ञान है जल, ज्ञान है नाव इसमें चढने का है - मौत नहीं करने का है। सबसे प्रेम रखें और किसी की पाई को हाथ ना लगायें ।

तू बोल मैं निराकार से पैदा हुआ हूं। मेरे को पैदा करनेवाला कोई पैदा ही नही हुआ है, पर जब तू ऐसा पहचानेगा-जितना-२ पहचानेगा, उतना-२ सुजाग होगा। ये पहचानने की बात है। वो ही सिमरेगा जो जानेगा। जे अपने को न जाना तो बाहर क्या जाना? अन्दर से बहती है प्रेम धारा।

ताकत अन्दर है पर प्रघट करनी चाहिये। खाली देह अध्यास किया। डिब्बे में बन्द करके रखा है। तू Alreadyआत्मा है तो इच्छा क्या करेगा? सौदा अपने से है - उससे Knower से तुम Promise करो-और सच्चा रहो। पहले तुम अपने को गुम करना, तो वो जागे। तुमको मालुम नही है कि तुम्हारे अन्दर वो ज्योति जागी पड़ी है। पर तू देह अध्यास में उसको ढककर बैठा है,अन्दर की ज्योति जागे ना। तेरे अन्दर वो ही ज्योति है-वो ही निराकार है-वो ही सत्य है-वो ही सत्य का सत्य है। ऐसे तू अपने से बात कर,तो देखो तुम्हारे से रोशिनी आती है या नहीं? तुम अपनी खोज करो, अपनी खोज में रहो,आखिर इस देह के पिंजरे में कब तक रहेगा? अपने KNOWER को जगाओ-उसको पकड़के आगे चलो। ज्ञानस्वरूप क्यों सुजागी देता है? वह NO करे तो NO कर, YES करे तो YES कर। हम इतने अन्धकार में हैं जो उसको सुनते नहीं। ज्ञान (गुरू) का मान कर, जिससे ज्ञानस्वरूप पकड़ में आये।

हम अपनी नेष्टा (OM) में हैं तो किसी को सुनेंगे भी नहीं-अपने अनुभव से चलें-जे अन्दर आवाज़ आये निराकार की उससे चलें। ज्ञान का ध्यान रहे, जो ज्ञान का ध्यान करता है वो उससे थकता नही पर लीन हो जाता है।

CONTD. 4.

जो गुरू को अच्छी तरह जानते हैं, वो गुरू के हर इशारे को जानते हैं और एकदम चल पड़ता है कि भगवान इस बात पर राजी होगा,मैं ऐसे चलूं। जितना हम REALISE करें, अपना विकार देखकर अनुभव करेगा, फिर वह विकार ना होगा। अतः ज्ञान का ही ध्यान करें।

जो तू आत्मा में प्रश्न करेगा, तो अन्दर में ही जवाब मिलेगा। खुद ही जान WHO AM I ना दुख है, ना सुख है, ना मान ना अपमान, न ONE न TWO ना हम ना तुम दफतर ही गुम। तुम अपनी आत्मा जानेगा, ज्ञान स्वरूप, ब्रह्म का मालूम पड़ेगा, तो लगेगा कि कितना शान्त हूं, KNOW THE TRUTH, जो सच को जानेगा तो झूठ से FREE हो जायेगा। जो है वह अन्दर ही है- जो अन्दर है, वह सर्वव्यापक है, निराकार है, OMNI PRESENT है।

तुम पल में दुखी होता है, पल में सुखी होता है, सारा दिन चिड़ चिड़ करता है, तो भगवान राजी होगा क्या? भगवान तो अन्दर में देखता है कि ये थोड़े में दुखी होता है, थोड़े में सुखी होता है। जो अन्दर बाहर सच है उसको सच मिलता है। ईमानदार कोई बने तो देखो निराकार क्या करता है? तुम भगवान को SURRENDER करेंगे तो वो तुमको प्रेरणा देगा। जैसे अँग अँग में सुजागी होवे कि गुरू यह कार्य कैसे करते हैं? एक ही धर्म है उसका KNOWER पालन करना। पुरा पालन करेंगे तो ठीक रहेगा। तुम्हारा जीवन अलौकिक हो जायेगा, लोक सृष्टि से न्यारा।

कभी-२ अजीब लगता है कि इतने अच्छे-२ लोग कहाँ फँस जाते हैं? प्रायः देखा गया है कि ग्रहस्थी के घर बर्बाद होते हैं। अभी मैं कैसे चलूं? जन्म लिया है तो जरूर उठेगा, बैठेगा, खायेगा, पियेगा, गिरेगा। हमको रास्ता लेने का है- जो खुद के मरने से दुनिया ही मर जाए। कर्म किसके साथ करें? हमारे सब कर्म ईश्वर अर्पण है। ईश्वर ईश्वर से कुछ करता नहीं है। हम दो है तो कर्म है - पर जब खुद ही खुद है तो कर्म नहीं है। भले दो दिखने में आये पर आत्मा एक ही है। उसकी सुजागी में रहो, - नहीं तो कोई ना कोई तुम्हारे उपर वार करता जायेगा और गुलाम करेगा।

जब हम ईश्वर सृष्टि में रहते हैं तो जीव सृष्टि वालों से रिश्ता क्यों रखें। जो प्यारी में प्यारी चीज़ सामने आये उससे मन निकाल के रखना है। मालिक देखो कौन है ? उसको पकड़ना है।

CONTD.5

[5]

हरि ओम में गुम हो जाओ कि अन्तवेले ओम जपने ही ज़रूरत ही ना पड़े । ज्ञान स्वरूप में, ऐसे पक्के हो जाओ कि तुम्हारे ORDER के बिना कुछ भी ना हो ।

ब्रह्म माया रहित है। सत्ता मात्र है, उसकी हस्ति है। तू चोरी कर- ठगी कर- ब्रह्म कुछ नहीं बोलेगा, पर आत्मा तुमको बोलेगी कि चोरी क्यों किया? क्या ज़रूरत थी? बराबर आत्मा है तो प्रेरणा आयेगी। ब्रह्म शान्त है- कोई हलचल नहीं है। जैसे सूरज उपर खड़ा है तो कौनसा कर्म करता है,कभी बोलता है क्या कि मैंने रोशिनी दिया-हस्ति उसकी है। आत्मा है तो प्रेरणा आती है। घरवालों के लिये ख्याल आता है- सॅकल्प विकल्प आता है। प्रेरणा आये कि कौन-२ सी ज़रूरत है, जो ख्यालों से खाली हो जाये। प्रेरणा आते-२ उसको खाली करेगा! अन्दर है कोई जो बोलता है।

ज़ीव में है, अपने को न जाना तो गधाराम है। तुम कितने नीचे हैं अगर जीव में है। पर आत्मा में कितना उपर है। असली जो निराकार है वह है। जीव है तो जगत है। दुख सुख, हानि लाभ सब है। आत्माकार को हानि लाभ है नहीं , उसको कुछ भी नहीं होता। हानि लाभ किसका होगा - क्या चाहिए हमको। चाहिए उसको जिसने ये स्वरूप धारण किया है, वो बन्धा हुआ है, इसको चलाने के लिए। अभी भी वो ही देता है, वो ही चलाता है वो ही खिलाता है, पर तुम्हारे को विश्वास नहीं है कि ये चोला किसने धारण किया है? जो हाज़िरॉ हुज़ूर ठाकूर है उसको तू झूठ समझता है, जो सत् है। पर जो अभी है, अभी नहीं है उस जीवपने को तुम पकड़के बैठे हैं। तो उससे क्या हुआ? मेरी आत्मा सबकी आत्मा सबके हृदय में मैं गाता हूं। कोई भी हृदय खाली नहीं है। सबके हृदय मे भगवान बसते हैं, पर कोई जानता नहीं है- कोई नहीं जानता है 'प्रभू ते भूलियॉ तो व्यापन सभी रोग'। तुम गहराई में जाओ। तू न बनेगा तो प्रकृति उपर नीचे होते रहेगी - फिर दुख सुख भी प्रकृति से मिलेगा। पर प्रकृति में जो पुरूष है उसे चुना तो वह तुम्हारा हो गया। फिर अन्दर देखो कितने शान्त हैं कि दुनिया में कुछ भी होवे हमें मालूम नहीं है, मेरे राज्य में कुछ होता ही नहीं है - ईश्वरीय राज्य है।

CONTD.6.

आत्मबोध हो जाये तो बाहर ढूंढने की ज़रूरत ही नहीं है- अन्दर में गोता लगायें। तुम अपना उद्धार करने जाओ ना कि रास्ते मे बैठ जाओ कि ये सुधर जाये वो सुधर जाये । सब सुधर जायेंगे पर तुम नहीं सुधरोगे। साऱी बात अपनी REALISE करने की है। आत्माकार है कि आगे भी मैं था अभी मैं हूं, इसके आगे भी मैं रहूंगा। प्राण छोड़ने के बाद भी मैं ही रहूंगा। इतनी तुमको नेष्ठा होवे, जो कभी नहीं आये कि मैं पैदा हुआ या मरूंगा। जन्मना मरना अज्ञानी की आदत है,ब्रह्मज्ञानी सब भुलाकर बैठा है।

अन्दर में जो कारीगर है वो ही प्रेरणा देता है कि मैं वो ही हूं, जो हूं ही हूं, तुम वो हो.जो है ही नहीं - YOU ARE NOT । मैं अरूप तुम स्वरूप को ज्ञान देने के लिए अनेकों नामरूप (अवतार) में आता हूं,लेकिन तुम अरूप को छोड़कर स्वरूप में फँस जाते हैं।

कितना आश्चर्यवित है- खुद ही हुआ है-खुद ही पैदाकरे-खुद ही खिलाये,फिर खुद ही सुलाये- इधर देखो उपदृष्टा हुआ बोलते है। हो मैं का रोग है, पर आत्माकार को कौनसा अहँकार है ? वो जहाँ तहाँ देखता है 'मैं ही हूं' आत्मा में आया तो मुक्त हो गया। देह की मथानी नहीं लगाओ, पर आत्मा में सत्त को मथ के निकालो, उसे मथेंगे तो अपने निज स्वरूप का आभास होगा। OWN का आन्नद लेना है- उसको ही पकड़ना है। परम ब्रह्म को अनुभूति ही परमान्नद है-शरीर झूठा रूप वह असली रूप है।

" आदम को खुदा मत कहो आदम खुदा नहीं है,
खुदा के नूर से मगर आदम जुदा नहीं है "

है ही भगवान। हरि का सेवक हरि जैसा। आज हम इतने भरें, मिटें, झुकें, गुरू प्रेम में कि जो खुशबू भी निकले तो हरि प्रेम ही निकले। इसलिए गुरू मिलते ही शास्त्र वासना की अपेक्षा गुरू में ध्यान लगायें।" सर्व धर्मान् परित्यज्य, माम् एकम् शरणम् व्रज" एक बार यह मज़ा चखें, पीछे कोई बात ही नहीं। ना निचे, ना उपर कोई सबक ही नहीं।

गुरू की महिमा भी क्या करें, वो हमेशा याद है, जिसने उसे जगाया। पहले यह मालूम नहीं था कि सबमें साईं है। साधू-चोर को एक पहचानो। नामरूप नाश है, आत्मा प्रकाश हो। मन बुद्धि जब चले तो समझो ये दीवार है - दीवार कहीं जाती है या कुछ कहती है ? इसलिए क्या इससे टकराकर सिर फोड़ेंगे ? निश्चय करना है - ज्ञान में रहकर चलेंगे, गुरू वचन में रहेंगे।

CONTD.7.

सतगुरू ने बताया कि सची FREEDOM है - जब गुरू आज्ञा में पूरा-२ चलें। गुरू का इशारा समझकर उससे चलना है। तुम देखो मेरा गुरू किससे खुश होगा? गलत कर्म तभी होगा जभी गुरू को हाज़िर-नाज़िर नहीं देखेंगे। निराकार तो ठीक है पर गुरू ने जगाया वो याद नहीं है तो तू चोर है। उसकी आज्ञा में ही यह शरीर चले तो निशचिन्त है। यही असली FREEDOM है। CARE FREE- FREE FROM ALL WORIES.

हर बात में अपने KNOWER से पूछो - वह तुमको चलाये। जो भगवान सतगुरू अन्दर है तो वो ही चलाता है। अन्दर ही KNOWER को सुजाग करो । गुरू का वचन अपना करो। यह नही कि गुरू तुम्हें उठाये बिठाये निष्काम कराये।

अगर हृदय से जगत निकल गया है तो भगवान ही बैठेगा। दिल दिलबर की जगह है, उसके सिवाय कोई नहीं बैठ सकता है। अन्दर वाले को जगाकर रखो। दीपक जलाया है अन्दर तो अन्धेरा रहता नहीं है। वह है, मैं नहीं हूं - यही दीपक जलाना है।

नूर देखेंगे तो प्रेम के सिवाय रह नहीं सकेंगे। सर्वत्र मेरा ही नूर है। INVISIBLE देखा तो सबसे नूर ही दिखता है। सब तो एक ही परमात्मा है। ब्रह्म की सत्ता एक सत्त है। जब देह अध्यास छोड़ा तो एक रस होंगे।

दर्शन साधू का तो साहेब आवे याद - साधू लिबास में नहीं है- साधू माना तो सदैव प्रसन्नचित है- शान्त है- मौन है- गॅभीर है- एक रस है- वही वह है जो अन्दर है।

ओम

प्रथम प्रणाम उस सतगुरू को जिनके मुख से पवित्र अमृत वचनो की गॅगा प्रवाहित हो रही हैं- और हम प्रेमी अपनी प्यास को शान्त करने में तत्पर हैं।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

'MIX कर्म '

[14]

० MIX कर्म घरवालों के साथ कर लेते हैं। तुम्हारी बहू तुमसे खुश है? घर में कोई कहे तेरा शब्द कठोर है तो मैं CHANGE हो जाउं। जो ये बोलता है तो ज़रूर ही मेरे में गलती होगी।

० जड़ चेतन की आशिष होवे। जड़ माना पलंग, CHAIR, पेड़, पत्थर आदि तिनका भी, सब के आशिष की ज़रूरत है। एक तिनके से भी द्वेष है तो उड़के ऑख में जाएगा। जड़ जूता भी ठीक न रखा तो ठोकर खाकर तुम ही गिरेंगे, तो आशिष कहॉ हुई ?

० मेरी माया, मेरा गलत वचन, मेरा शरीर, मन, मेरा कर्म, मेरी आदत, मेरे स्वभाव संस्कार से कोई दुखी न होवे।

० एक-एक स्वास की कीमत करें,फिज़ूल न जाए स्वास। धर्मराजा का धर्मराज तू है। सतगुरू भगवान को गलती बताएँ। भगवान करूणा दिखाते हैं। शरीर भोगेगा। तू अजर अमर है। धर्मराजा का धर्मराज तू आत्मा है।

० फुल स्पंज तृप्त तब है जब न मान न अपमान, न दुख न सुख, निईच्छा है, कोई कहे ऐसे कर तो किया।

प्रेमी :भगवान मैं घर में पूछते हैं कि मैं ने राईट बोला क्या ?

भगवान :सब आदमी सब में संस्कार है, इच्छा है, मोह भी है, MISER भी होते हैं, अपने अन्दर खोज करें।

० जहॉ शादी हुई,वहॉ तेरी प्रालब्ध है,वहॉ तुझे रहना है,किसी का पक्ष लेके MIX कर्म ना कर।बेटा हो या बेटी, MIX कर्म बनाते हो।बेटा कहता है पड़ोसी के बेटे ने मुझे मारा,मुझे ये बोला और हम बेटे का पक्ष लेके कहेंगे पड़ोसी का बेटा गंदा है,तू उससे बात न कर।तो उसके मन में द्वेत डाल रहे हो।उसे नही कहते कि तुम्हें उससे प्यार करना है,या पड़ोसी के बेटे की बात हम नहीं सुनेंगे कि मेरे बेटे के लिए वो क्या कह रहा है। वो भी सुने। दोनो तरफ का न पूछके अपने वाले की बात सुना तो MIX कर्म हुआ। पति का पक्ष लेंगे,जो उसके OPPOSITE हैं उसके मन में तेरे पति के लिए क्या बात है ये नहीं जानेंगे, ये MIX कर्म हुआ। ये है MIX कर्म लड़की ससुराल से मैके आयेगी, वो कहेगी मेरी सास ऐसी, मेरी ननंद ऐसी, देवर ऐसा है तो मॉ बेटी का पक्ष लेकर कहेगी मेरी बेटी दुख पा रही है, ये लोग ऐसे हैं, ये है MIX कर्म। बेटी को नहीं कहेंगे मैं तेरी बात सुनके नही बोलूंगी।

CONTD.2.

मैं दोनों तरफ की बात सुनूंगी। उनकी भी संनेंगे तब बोलूंगी। जो लड़की ये बात सुनके मेरी सास ऐसी, मेरी ननंद ऐसी ये बोलना बंद कर दे। बेटी को नहीं बोलेंगे तेरी प्रालब्ध उधर है, तुम्हें उधर ही FIT होना है। तुम्हें उनसे ही निभाना है। बाप भी क्या करता है, मैं पैसेवाला हूं, मैं रखूंगा तुमको, तो बेटी की वासना किधर जाएगी ? बेटी का और उसके आदमी का नुकसान किया, तो MIX कर्म किया। उसे मुड़ना, झुकना, नम्रता करना सिखाया नहीं।

घर में सब तृप्त होवे, नोकर से लेके सब। सबकी आशिष से हम उपर उठेंगे! कोई हमसे दुखी नारांज़ है, हम उनको ठीक करेंगे प्यार से, विचार की लेन देन करके। उन्होंने हमें सुधरने को कहा तो हम अपने को CHANGE करेंगे। नम्रता, झुकना (अहंकार न करना) प्यार करना। अपनी कमी हो तो निकाल दो।

जगत में सब होता है। किसके घर में एकदम चार मर जाते हैं, घर जल जाता है, ऐसा भी होता है प्रकृति में। वो है CHANGEABLE । आत्मा में कुछ होता ही नहीं है। प्रकृति से FREE हो, गलती मेरी न हो ये सुजागी रखनी है। मेरा कर्म ना बने। दुख ना करो, मुस्कराओ, मन को पहले दिखाओ सब मरे पड़े हैं। शरीर नाश्वंत है। ये शरीर, बेटा-आदमी सब शरीर मरने वाले हैं, तो पहले ही तुम विचार से मरे हुए देखो। पहले ही तुम अपने को सब गाली देके बैठो, फिर कोई बोले तो तुमको मान-अपमान लगेगा ही नहीं। सब से गलती होती है, उधर गलती ना देखें। उधर निराकार सत्ता देखेंगे तो गलती किसकी देखेंगे ही नहीं। अपनी कदर किया तो दूसरे की कदर करेंगे। तुम तृप्त हैं, तुम्हारी प्रति किसकी शिकायत नहीं है, उधर भी तृप्त करेंगे, अपने को प्यार करें। राग-द्वेष किया तो प्यार कहाँ किया? शरीर को ठीक खाना पीना दें, EMOTION नहीं, मन शांत, शांत, शांत। भगवान के वाणी से ये सतसंग में हमें अपनी भूल मालूम पड़ती है कि इधर मेरे से भूल हुई, मेरे में द्वेत है, राग भी है। राग है वहाँ ही संबंध में द्वेष भी होता है। हम इच्छा रखते हैं ये ये करें, ना किया तो द्वेष हो जाता है। अपना पराया मेरे में है, इधर अहंकार से बोला। और सतसंग में अपनी भूल मालूम ही नहीं पडती है।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

'निश्चय'

[15]

निश्चय है मान न मान तू है भगवान। निश्चय है मैं देह नहीं मैं आत्मा हूं,है ही भगवान। आत्मा अलग है,देह अलग है। जो यह निश्चय नहीं करेगा,वो जन्म२ धक्का खायेगा,नर्क भोगेगा। निश्चय की ही जय है।

गुरू के सामने निश्चय कर लो,फिर जो मर्जी आए करो-घूमो, फिरो। गुरू तुम्हें निश्चय करायेगा,फिर खाली का खाली। जैसे सागर है,वैसे तत्वज्ञानी खाली है फिर दूसरों को निश्चय कराओ,फिर अन्दर ज्ञान का भी ख्याल न चले! गुरू का ऋण भी उतारना है।

आत्मा निश्चय के स्विाय कोई भी कर्म तुमसे RIGHTनहीं होगा कृष्ण अर्जुन को कैसे दिखाता है कि ये सब मरे पड़े हैं। माना एक तो RETURN TICKET है,जो पैदा हुआ है वो अवश्य मरेगा। दूसरा ये कोई नहीं जानता कि मैं अजर अमर हूं। इस बात का शौक हो, आत्म बोध का। जैसे आत्मा से देखे "मै ही तो हूं" देह से ना बोलो 'मैं ही तो हूं'।इधर निश्चय करना है।जितना कोई निश्चय करेगा,उतना ही फल पायेगा। जभी है ही सत्य तो झूठ की मिलावट क्यों करे? तू मैं किससे करें,यह सब जगत है।

कृष्ण भगवान निराकार के निश्चय से बोलते हैं कि मैं ही तो हूं। वो भी अर्जुन के लिये,नहीं तो बोलने की ज़रूरत ही नहीं है। पर श्रदा वालों के लिये सब बोलना पड़ता है। आत्म निश्चय के सिवाय तुमसे भूल ही होगी,अभूल कभी ना होगे। भूला -मन्द बुद्धि की निशानी है। उत्तम बुद्धि वाला गुरू को जल्दी पकड़ता है। मन्द बुद्धि वाले को व्यंवहार बहुत अच्छा लगता है, परमार्थ नहीं। उसमे सफाई सच्चाई नहीं है, पर जिसे(उत्तम बुद्धि) परमार्थ अच्छा लगता है,उसे व्यंवहार नहीं।

तो पुरूषार्थ है-निश्काम में अंधा होके रहें। जैसी प्रीत हराम में वैसी हरि में हो। हराम में लोग घर बार लुटा देते हैं-जुआ में,शराब में,ऐसा कौन निष्कामी है जो बोले 'मैं पीछेवालों के लिए क्य रखूं? चला तो जाउंगा सृष्टि से। उसे आगे पीछे याद ही नहीं है कि क्या होगा? इसीलिए गुरू निश्चय की बात ज़रें-ज़रें करता है कि जब तू आत्मा है, तो सर्व आत्मा ही है, आत्मा पश्यन्ति आत्मा। यदि देह है तो आगेवाला भी देह है। पर जब मैं ने जीवभाव को CROSS किया कि संसार में कोई ना बचे जो मुझे देह करके देखे। कोई हमारे पास आये जो हम उसे निश्चय करायें कि तू ने

मुझे क्या देखा? तू कौन मैं कौन? किसी का मेरी देह में मन है तो GET OUT करेंगे,देह देखेंगे तो चमार है। जो मेरे पास आये उसे भगवान दिखायेंगे। उसे निर्णय करायेंगे कि तू कौन है ? उसे निश्चय करायेंगे, तो उसे भी नेष्ठा होगी कि यह सत्य है।

यहाँ वो ही श्रद्धा वाला आए जो साधना में रहे,बुद्धि न चलाये, गुरू वाक्यम सत्यम् करे,मौन रहे। TIME PASS के लिए नहीं। भले एक दो आये पर जगत और व्यंवहार की बात नहीं करेंगे।मेरे से तो यहाँ अब निमित्त मात्र कुछ भी होता है,न कोई दृश्य भासता है, न कोई कर्म होता है। कर्म तो दो में होता है। न कोई इच्छा है न मनोनंजन है न दूसरा ही दिखता है। शरीर की क्रिया की तरह और भी क्रिया हो जाती है। बात भी करते हैं तो जैसे अपने से, दूसरा है ही नहीं।TOTAL मन और वाणी खलास। अपने से सच्चा रहके भलाई करो। एक बार ही पक्का निश्चय कर लो। तू निष्कामी है तो तुम से भी निष्कामी बनेंगे,क्योंकि जिससे अपनी देह नही छूटती वो दूसरे को क्या ज्ञान देगा।

ज्ञानी को तो अज्ञानी दिखता ही नहीं। एक भी अज्ञानी जो मुझे नज़र आए तो सारा जगत मेरे अंदर है। वासनावाले को तत्वज्ञान निश्चय नही होगा। यह सब रंग रूप भगवान ने ही धारण किये हैं। कोई भी वासना है तो देह से नहीं उठेगा। चाहे सब कुछ भी होवे पर मुझे कुछ नही चाहिए मैं FULL तृप्त हूं,भरपूर हूं। ऐसा RECORD OF REGARD रखो। घट२ वासी देखो हृदय में कौन? उपर नीचे,अंदर बाहर कौन है? सब में रोशनी नूर किसका है? जो तू है सो मैं हूं। गुरू करे आप समान। ONENESS, SAMENESS, OWNSELF निश्चय में पक्का। जो आज मेरे गुरू के सामने कोई निश्चय नहीं करेगा,तो कभी कर सकेगा? देवता जैसे लक्षण रखो तो जल्दी तैयार हो जायेगा। नीच बुद्धि खुद ही देखो,मेरा स्वभाव संस्कार क्या है ? गुरूमुख होके फिर एक भी भूल करनी पाप है। गुरू से निभाना, पूरा रहना, पूरी मर्यादा करना, नहीं तो बेगाना हो जायेगा। टहनी एक बार पेड़ से टूट गई तो जुड़ नहीं सकती। गुरू ने बताया कि सारा जगत अवतार है। भगवान से यह दिव्य दृष्टि लेनी है। निराकार ही निराकार है। कोई बुरा नही भले मन के वास्ते। ज्ञान की, प्यार की मस्ती और नशे में रहना है। दृष्टि मिले तो उसे पक्का रखो, खो नहीं देना। इतना ज्ञान सुनके भी तुम निश्चय नहीं करेंगे तो मेरे दिल में तुम्हारे लिए क्यों

जगह हो? जो ज्ञान उतारता है अपनी LIFE में उसके लिए प्यार होता है। ज्ञान में एकदम उल्टे हो जाओ।दुनिया देखे कि इसने माया को लात मारके कितनी जल्दी इतनी IMPROVEMENT कर ली है। CHANGE नहीं आयी तो खुद ही शर्म आये कि गुरू की इतनी मेहनत लेते हो। रवाजी विद्यार्थी को भी जो एक ही CLASS में तीन साल FAIL होता है तो SCHOOL, COLLEGE से निकाल देते हैं। पहले ज्ञान पीछे प्यार। मुझे पक्का निश्चय होवे जो दूसरे को भी कराउं।

पहला सबक ही नेष्ठा का है । तुमने कितनी नेष्ठा की है ?

कितना तीन 'वासनाओं-देह,लोक,शास्त्र से उपर उठे हैं? गुरू से लेन देन कितनी करी है? अहंकार, पांच विकार, जगत कितना मिथ्या किया है? त्याग भावना कितनी है? सुख बुद्धि कितनी छूट्टी है? कितना JUMP लगाया है? मरने से पहले कितना मुस है? मैं हूं ही नहीं यह निश्चय किसने किया है?शरीर को पड़ोसी,निर्विकारी किसने किया है? CHARACTER FAULTLESS किसने किया है? भगवान में FAITH नहीं है तो तू बेईमान है। मनुष्य मन का ईश्वर है सब कर सकता है,सो फैसला करो,निर्णय और निश्चय करो एक बार। आत्मा से आत्मा देखनी है। सो मन की सफाई बहुत ज़रूरी हे। जैसे चोर चोरी से नहीं छूटता वैसे मन से अज्ञान नहीं छूटता। सो एक बार दृढता से बीस नाखून का ज़ोर लगाओ।

सूखा चना चबायेंगे एको ब्रह्म लखायेंगे

यह पक्के आदमी का काम है, मैं अपने उपर ही तलवार लगायेंगे, दूसरे पर नही। मोह, वासना और अहंकार निकालने का ही पुरूर्षाथ करूंगा। साक्षी होके देखूंगा कि उस बात कें क्या होगा? खुशी से ख्वाब करूंगा। (WILLING RENUNCIATION) और जब आवे संतोष धन तो सब धन धूल समान। अभी कर्मों का ACCOUNT बिलकुल बंद- ज्ञान भया तो कर्म ही नाश। अभी ये ही निश्चय है कि मेरा तो स्वभाव ही निष्काम है। मुक्त है मैं NORMAL और NATURAL आत्मा हूं। सहज सरलता,मौन गंभीर एक रस शांत STILL हूं।

जब एक बार निश्चय किया तो जगत मेरे में रहा ही नहीं। तू मैं रहा ही नहीं। तभी सहज समाधि में आना चाहिए। जो निरोध विरोध करे ही नहीं। NEITHER SEEK NOR AVOID पर तुम अभी कोई स्थिति में ही नहीं है। ऐसी स्थिति आ जाये,जो न इच्छा रहे,न अहंकार, न द्वैत न द्वेष,

तभी फिर मन को विचार देना नहीं पड़ेगा। फिर तो सहज स्वभाव हो गया। फिर न त्याग न ग्रहण। यह तो मेरी बात है,पर तू भाया में है तो अभी तेरा काम शुरू ही नहीं हुआ है। तुम देरी क्यों करते हो? पक्का पुरूषार्थ करो जो मन से गल्तीयां छुड़ाये, मन की डोरी को मजबूती से पकड़ो। अब कुछ बनना नहीं है और अपने को देखो कितना लगातार सुमरण में हो? दूसरा देखते ही नहीं, अपने मे ही गुम है, फिर बाहर का प्रपंच अच्छा ही नहीं लगेगा।

फिर कभी पूछते हो तुम निश्चय कैसे होवे? तू कौन है निश्चय करने वाला? यह पहेली नहीं सुलझाते तभी तो उलझन में हो। निश्चय करे तो कौन करे? VISIBLE INVISIBLE (साकार, निराकार) को कैसे पहचाने?जो निराकार है वो साकार BODY के THROUGH कैसे मिलेगा? जो तुम देह के THROUGH निश्चय करना चाहते हैं? A CREATURE CAN NOT KNOW THE CREATOR । बेटा बोलता है बाप को मुझे अपनी शादी पर क्यों नहीं बुलाया? वो पेदा ही नहीं हुआ था। 'पिता का जन्म क्या जाने पूत', इस LINE में कितना अर्थ है।परमात्मा का बच्चा 'तू', आत्मा परमात्मा को कैसे जानेगा? यह पहेली सुलझाओ। जब मेरी ''मैं'' मिटे,जब हम है तो तू नाहीं जब तू है तो हम नाही। गुरू उसको जनायेगा जो अपना नाश करता है।जो अपने को छिपाये-भगवान को प्रकट करता है।

कृष्ण ९ अध्याय गीता में कहता है "मैं सब के हृदय में हूं" फिर कहता है "मैं किसी में हूं,किसी में नहीं"। कोई मुझे जगा के बैठा है,कोई मार के,कि मैं फलाणा हूं। BUT I AM MISTRY। यह बुद्धि वाले का काम नहीं है, इसके लिये सत्य सरलता चाहिए कि मैं कुछ जानता ही नहीं हूं। बिल्कुल छोटा बच्चा बन जाओ, फिर निश्चय होगा। जैसे छोटे बच्चे को EGO गुस्सा क्या मालूम? हमें कोई चार गाली भी दे तो हम मुस्कराये कि ये शरीर लायक है इस गाली के और ये इसका अहंकार मिटाते हैं। पहले तो निश्चय करना है 'मान न मान तू है भगवान'। भक्ति भले हम करे वो तो हुआ प्रेम लुटाना (ज्ञान) । एक हमारी BANK में MONEY है (मुक्ति),दूसरी हमारी PURSE में MONEY है (ज्ञान)तो नंष्ठा करओ,आत्मा में टिकाओ। जो नहीं जानते (अज्ञानी) उन्हें भगवान पकड़ाओ, जो जानते हैं (सत्संगी) उन्हें निराकार में टिकाएं। वो भले सौ दफा देह की बात करे,पर हम हज़ार बार आत्मा में टिकाओ। तुम भागवत की तरह ज्ञान बताते है(कान रस)

(कृष्ण लीला) निश्चय की बात नहीं करते। तुम कहते हैं वो माया से आया है तो उसे लीला सुनाते हैं, पर वो माया से थक्का आया है तो पाण निश्चय करके जाये ना। हम तो पहले ही कहते हैं "घड़ी इक विसरूं राम को..""आखां तो जीवां ...."। वो देह की बात करें, हम आत्मा की करेंगे, पर गुरू की देह की बात नहीं करेंगे। यह लीला ढिंढोरा नही पीटेंगे कि तुम गुरू के पास जाओ। पर सत्य बताओ,मेरा गुरू तो देह ही नहीं है, तो मैं उसके देह की बात कैसे करूं ?

निश्चय के सिवाय नम्रता और झुकना होगा ही नहीं,फिर देह उठेगी फिर बकेंगे। तुम गुरू के कौन से वचन का ध्यान करते हो और रहनी में लाते हो? जनक राजा निश्चय सुनाता था,तुम कभी नहीं सुनाते कि गुरू तुम्हें आगे बढ़ाये।अपना निश्चय सुनाओ,अभी क्या भासता है,क्या नहीं, निश्चय भी तब होगा जब वैराग आयेगा। पहले गुरू से निश्चय करना है- मैं आत्मा हूं फिर भले लाख शास्त्र पढ़ो उसमें वासना नहीं जायेगी। आत्म निश्चय में ही तृप्ती आयेगी। गुरू के पास केवल अपने उद्धार के लिये आओ न कि तर्कवाद,ARGUMENT करने के लिये,न अपनी होशियारी दिखाने के लिए। ऐसे पॉच मिनट सामने बैठके पॉच मिनट में ही निश्चय करने की बात करें। पॉच मिनट में ही निश्चय करेंगे तो भूल नहीं करेंगे,तर्क नहीं करेगे, तू मैं नहीं करेंगे। हो तुम बेवकूफ(भगवान से बेवाकिफ) पर बनते हो सयाने। गुरू से DIRECT LINK रखकर यही सोचो कि शल एक भी मेरे अन्दर भर्म न आये। अपनी मौन और निश्चय की चिंता करें, तब तक हम न किसी से मिलेंगे न बात करेंगे। तब तुम्हें (एकान्त) में पता पड़ेगा कि यह भी क्यों बोला? यह कर्म क्यों करा? गुरू की MISTRY में रहना है, बाहर उसकी बात नहीं सुनानी, नहीं तो ESSENCE चला जायेगा। गुरू मेरी कोई भी परीक्षा ले मैं तैयार रहूं। गुरू और मेरे बीच कोई तीसरा न आये। ज्ञान की नेष्ठा वैराग्य के साथ मिलेगी, जैसे दवाई खाते हैं तो साथ में VITAMIN भी खाते हो। जैसे आत्म निश्चय पक्का होगा वैसे ही गुरू नज़दीक नजर आयेगा। आत्मा को जानने से ही गुरू नजदीक लगेगा। जब गुरू अन्दर आये तो झूठ निकल गया। झूठ है क्या? झूठ है जगत की बात, पदार्थों की बात करता।

अपने स्वभाव संस्कार को बिल्कुल उल्टा न करेंगे तो निश्चय भी न होगा। जो जन्म से संस्कार लेके आये हैं उनको एकदम उल्टा करो।

यदि स्वभाव तेज है तो ठंडा होना चाहिए। ठंडा है तो उसको गर्म होना चाहिये (शक्तिमान) । जब तुम्हारा मगज़ गर्म हो (क्रोधी) अकेला कोठरी में बैठ, मौन में। जब पूरा ठंडा हो जाये (भगवान जैसा) तब कमरे से निकल के प्रेम का व्यापार करो।

जिसने भगवान में पूरा मन बुद्धि अर्पण किया है तो निश्चयात्मक बुद्धि है नहीं तो संशयात्मक बुद्धि है।

जो ज्ञान में रहेंगे उनकी पक्की नेष्ठा है कि मैं अजर अमर हूं। मौत से छुटे हुए हैं क्योंकि आत्मा ही है, चाहे आत्मा देखने में नहीं आती (INVISIBLE) है पर FEELING में, अनुभव में आती है। सब स्वाद कौन चखता है? कौन FEEL करता है? यह अनुभव करो (HIGHEST POWER)। प्रकृति सुलभ है तो मैं खुश हूं, यह कोई आनन्द नहीं है। आनन्द तभी है जब मैं पूरा अद्वैत में हूं। ONE WITHOUT SECOND इन्हें मुख मिले तो बोलते हैं मैं ज्ञानी हूं, (बन्द ज्ञानी) पर अद्वैत में शुद्ध होके नेष्ठा बताओ। मेरा तो एक शब्द का भी किसी से व्यंवहार नहीं है।

संसार में बिल्कुल उल्टे (पहले जैसे नही) नहीं होंगे तो आत्म रस नहीं आयेगा। संकल्प विकल्प आयेगा तो देह अध्यास कैसे छूटेगा?

आत्म नेष्ठा से (1) वो TOTAL अकर्ता है। (2) वो कभी नहीं बोलेगा-इसने ऐसा किया। (3) वो भले के भाव से चलता है (4) अपनी WILL से न खाता है न चलता है।

अभी ज्ञान के निश्चय में रहो। जो एक निश्चय बुद्धि होगा, वो देह में कभी आ नहीं सकेगा। पाण घर में हम NORMAL NATURAL रहकर कितना निराकार पकड़ सकते हैं? कितना विवेक विचार जाग सकता है?अन्दर से निराकार इतना पक्का होवे तो आपे ही उसका आकर्षण बाहर होगा।

गीता भी भगवान भी रोज कहते हैं- तू आत्मा है, अजर अमर है, नाम रूप नहीं है, पर तुम विश्वास नहीं करते हैं, बार२ अपने को जीव बताते हैं। एक बार गुरू से निश्चय कर, फिर विश्वास क्यों डिगे? फिर आगे चलते चलो२ । अन्दर ही अन्दर निराकार पक्का करते चलो२ तो पक्का होगा।

हर कदम दृढता से,अनुभव से FIRMNESS से पड़े, पर सीढ़ी पर पैर जमाकर आगे कदम रखेंगे तो फिर आगे बढ़ेंगे।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

'परेशानी'

[16]

भगवान : तुमको इतने भजनों में से कौनसा भजन अच्छा लगता हैं।

प्रेमी :भगवान "मुझे मेरी मस्ती कहाँ लेके आई" ये भजन पसंद है।

भगवान : मनुष्य जो है ना, वो परेशानी में है। है ना? आयो नंगो,वेंदो नंगो पोए छा जी परेशानी? आज समझो कोई चले जाता है तो इतना परेशान है। जीते जी मरे वो एक भी नहीं है।

एक माई बोलती है मेरे को चार बेटियां है मैं उनकी शादी कैसे कराउंगी? वो मर जायेगी फिर उनकी शादी हो जायेगी, ये कुदरत की बात है। चारों शादी करके सुखी हो जायेगी, फिर वो परेशानी क्यों करती है? परेशानी काहे को करें? क्यों करते हैं? मेरे को ये LINE कल से अंदर में बहुत चल रही है, आयें नंगो वेंदे नंगो फिर विच परेशानी काहे को लेते हैं?

प्रेमी :भगवान अज्ञान में यही तो रोना धोना होता है।

भगवान : अज्ञान हुआ या मुसीबत है? ये बात तो सरल है ना कि तू आया नंगा और जायेगा नंगा फिर परेशानी क्यों करते हैं, गठरी क्यों लेके चलते हैं? एक गठरी लेके आया, वो भोगना भोगता है, फिर दूसरी गठरी बनाता है वो मेरे को अच्छा नहीं लगता है कि गठरी फिर बनाके जायें। एक खलास किया वरी दूसरी बनाके जायें? परेशानी।

प्रेमी : भगवान घर SHIFT किया है, नया घर एकदम सत्संग के बाजू में है।

भगवान : सत्संग तुम्हारे अंदर है, बाहर सत्संग छोड़ दियो। सत् का संग, वो है सत्संग, बाकी ये (बाहर) सत्संग काहे का है? भली सत्संग हाल में भी बैठे रहा पर ज्ञान नहीं होगा।

प्रेमी :भगवान हमको विक्षप आ जाता है तो सत्संग माना क्या?

भगवान : सत् जो है, जो है, हमेशा है, सो सत् है और कौनसा सत् है? उनका संग है तो बाकी काहे को करते है परेशानी? परेशानी तो करनी नही है।

प्रेमी :भगवान बोलते है तू माया के अधीन है,काल के अधीन है ...

भगवान : माया है तिलस्म बाज़ी। माया सच नहीं है, जैसे कोई जादूगर दिखाता है, करोड़ हो गया, लाख हो गया, ये जादूगरी है।

CONTD.2.

प्रेमी :भगवान काल माना क्या?

भगवान : काल माना TIME, वो TIME के अधीन है।ये एक LINE है दादा भगवान की जिसमें आठ प्रकार की बातें हैं कि काल के अधीन है, प्रारब्ध के अधीन है तो जभी तुमको कोई दुख या चिंता आये तो तुम बोल दियो कि प्रारब्ध ऐसे ही होती है, जैसे लिखा होगा वैसे ही होगा,तो बाकी क्या?

प्रेमी :भगवान सत् पक्का है पर कभी२ बोल देते हैं तो ये हमारी आदत है?

भगवान : मेरे को तो एक यहीं LINE अच्छी लगती है ये पुराना भजन है "तूं आयें नंगो वेंदे नंगो पोए काहे की परेशानी"। समझो दूसरा परेशानी में है, फिर मैं बोलते हैं कि ये बेचारा क्या लेके गया? परेशानी लेके गया। और व्यंवहार इतना बेकार है, जगत, जो बात ही नहीं है, है सब परेशानी- ये मनुष्य भरा पड़ा है परेशानी से। तो मुर्दा जाता है तो मैं बोलते हैं वो गया, अभी परेशानी कौनसी लेके गया? पाण ज्ञान मिलता है, मरता किसका है और ज्ञान इधर हमको होता है। तुम ये बताओ पाण तुमने ये LINE अपने से लगाई। जो LINE मेरे को कल से चल रही है? आज मेरे को कोई भी परेशानी नहीं है। काहे की परेशानी? जो होना है सो हो रहा है, मेरे को थोड़ी हो रहा है, बाहर हो रहा है, उसमें मेरा की? जो परेशानी में हम पड़ें? सब मनुष्य परेशानी में पड़े हैं। ये नही बोलते हैं कि सब तिलस्म वाज़ी है, थोड़े वक्त के लिये है पर सच नहीं है। परेशानी लेके बैठे हैं- ये मेरी बेटी कभी शादी करेगी, ये कैसे होगा,फलाणा टीरा कभी .... परेशानी । इन्होंने समझा कि हमको परेशानी होती नहीं है पर होती है तो भी।

प्रेमी :भगवान वाणी में चला भगवान से पहले मैं हूं, ये खेलिये?

भगवान : I AM BEFORE GOD WAS क्यों? पहले तुम आये फिर तुमने मेरे को देखा। कौन पहचानता है? तुम्हारे THROUGH पहचाना ना।

प्रेमी :भगवान अपने बोला तुम पहले हैं मैं पीछे हूं।

भगवान : मैं तो हूं पर मेरे को प्रघट किसने किया? इन लोगों ने किया ना- नहीं?

प्रेमी :भगवान आप तो थे ही भगवान?

भगवान : हम तो थे पर हमको प्रघट किसने किया ?

CONTD. 3.

प्रेमी :भगवान इसका मतलब हम अगर आपको ना प्रघट करते फिर भी आप तो थे ही थे भगवान।

भगवान : हां, वो तो मैं अपने को जानते हैं पर जितने भी लोग हैं जो दुनिया में कीर्ति है ना, तो बोलते हैं, बहुत अच्छा है-३। समझो या ना समझो पर बोलेंगे बहुत अच्छा है। क्योंकि ये भीड़ देखते है ना तो अच्छा लगता है पर अपने को नही जानते हैं।ये एक कमी है हमारे पास जो, मनुष्य जाते हैं, समाधि, ध्यान, व्रत करने में, तो काहे के लिये समाधि करते हैं? क्यों कि ये अपने से अभ्यास नहीं करते हैं, कोई नहीं करता है, अपने से बैठे-वो नहीं करते हैं,कोई नहीं करता है तो बाकी ज्ञान काहे का? ज्ञान है अपने से SINGLE का, करे तो जेकर भीड़ होवे ही ना।

प्रेमी :भगवान पहले हम सतगुरू को समझते थे कि वो भरपूर है, अभी लगता है कि हम भी प्रेम से, STILLNESS में, करूणा में भरपूर हैं।

भगवान : हम तो ऐसे देखते हैं ना कि सब भरपूर हैं। कोई नहीं जानता है- ऐसी तो बात लगती ही नही है। रास्ते में जो भी BUS गाड़ी में बैठते हैं उनको भी ये मालूम है कि ये इस सत्संग की है। क्यों जानते हैं कि ये इस सत्संग की है? वो कौन सा NUMBER है, तुमको क्या पड़ा है जो वो ये जानते हैं? क्यों कि मुस्कराहट इधर है, दूसरे सत्संग में मुस्कराहट है नहीं, मुंह सुजाके जाते हैं। इधर सब काले चिट्टे हो गये हैं! माना ऐसा ज्ञान है ना जो मनुष्य काले से चिट्टा हो जाता है।

प्रेमी :भगवान ज्ञान भी लिया है पर जिस पद की इच्छा करते हैं उस पद पर पहुंच नहीं पाये हैं।

भगवान : जेकर तुम्हारा नाम रूप याद है तुमको, तो तू कभी नहीं पहुंचेगी। जभी तू अपने को मिटाओ तो तू पहुंची पड़ी है। अपने को हम मिटाने आये हैं ,बाकी नाम रूप से मतलब नहीं है।

प्रेमी :भगवान ज्ञान से परेशानी चली गई है।

भगवान : अभी भी परेशानी है। ये LINE टक्के वाली नहीं है। तुम्हारे घर में अगर कोई मरे तो तुमको परेशानी नहीं होगी? उसी समय ये बोलो ना- मैं हूं ही नहीं, आया अकेला जायेगा अकेला तो मैं काहे के जिये परेशान होउं?

CONTD. 4.

[4]

प्रेमी :भगवान एक किस्म की परेशानी थोड़ी है, हज़ार किस्म की है?

भगवान : एक ही अक्षर को याद करे कि मनुष्य आया और फिर परेशानी लेके गया- बेटी की, बेटे की, माया की, शरीर की सब इधर बोझ है।

प्रेमी :भगवान परेशानी इच्छा और अज्ञान की वजह से है?

भगवान : जभी इच्छा होवे या अज्ञान होवे, मैं आपसे पूछते हैं, काहे की परेशानी? एक ही अक्षर बोले ना। इच्छा मैं नहीं बोलते हैं, कुछ भी नहीं बोलते हैं- पर परेशानी काहे की उठा रहे हैं कि ये कभी सुधरेगा, ये कभी शादी करेगा ..। वो तो हुई बात TIME की, पर मैं क्यों परेशानी लेके मरूं?

प्रेमी :भगवांन परेशानी कोई ना कोई रूप लेके आती है।

भगवान : सब ये ही बोलते हैं कि कभी ना कभी कोई परेशानी है,पर आया खाली है, जाता खाली है फिर परेशानी काहे के लिये लेके जाता है?

प्रेमी :भगवान इसी दर पर परेशानी दूर होती है।

भगवान : वो तो सच्ची बात है, हम ही बोलते हैं काहे की परेशानी? वो इधर छोड़के जाते हे (परेशानी) तो भी जभी अपने घर जायेगा तो मस्ती लेके जायेगा।

प्रेमी :भगवान इधर आकर सब गोलियां छूट गयी है पर देह अध्यास नहीं छूटा है।

भगवान : बड़े में बड़ी ये बात है - भली तुम लाख सत्संग करो, लाख गुरू करो,ये करो, वो करो, पर कुछ नहीं होगा।

प्रेमी :भगवान संसार में रहकर सास ससुर की मर्यादा कैसे करनी चाहिये?

भगवान : सास ससुर इधर कहाँ से आया? सारा भजन बोलो। भजन चला - हीअ दुनिया अथई फानी,मतॉ करीं तूं नादानी,आयें नंगो.....

कल से मेरे को ये LINE चल रही थी आये नंगे, जायेंगे नंगे, तो परेशानी क्यों लेके बैठे हो? इसकी चिंता उसकी चिंता, आया है दुनियां में सुख लेने के लिये यॉ परेशानी लेने के लिए? कितनी चिंतायें करते हैं जैसे कि वो हमारी मदद करेंगे। तुमको ये भजन पसंद आया?

प्रेमी : भगवान ये मालूम भी है कि सत् है फिर भी परेशानी क्यो होती है?

भगवान :काहे के लिये परेशानी करें? कि ये कभी होगा, कभी पैदा होगा, कभी मरेगा, हमारा क्या जाता है?तुम भली लिख लियो कि काहे की परेशानी?

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

जो भी सत्संग सुने वो मर्यादा करे, जीव भाव लगा पड़ा है और तुम निष्काम कर्म करते हैं, तुम को गुरू याद नहीं है, पीड़ा नहीं है तुम को, हमने अपने तन को भुलाया तभी सुख दिया, जभी तन का सुख भूलेगा तभी सब की भलाई कर सकेंगे, सब को सुख दे सकेंगे, तभी फिर सांई तुम्हारी प्रकृति सुलभ करके देगा, मेरे को अपना सुख टके का भी याद नहीं है कि सुख होता क्या है? इतना हम गुरू के साथ रहे, बैठे, घूमे-फिरे, पर टके का सुख याद नहीं है, सारा TIME सब की भलाई में गुज़रता है। रात को भी कोई प्रेरणा आयेगी तो नींद से उठकर बोलेंगे कि मीरा यह सेवा है। दुनिया में देखो कितनी बड़ी सजाएं हैं, एक आदिमी बड़ा शहूकार पकड़ा गया, उस को १४ साल का जेल हुआ, कई देश द्रोही है, चाहे ACTOR है, उसको बड़ा जेल है, देखो कितनी सजाएं हैं। मैं तुम्हारे गलत कर्म की तुम को कौन सी सज़ा देते हैं? जैसे देश-द्रोही है-गलत है,ऐसे कई गुरू द्रोही है गुरू से छुपाके गलत कर्म करते हैं, तो उनको बताओ हम क्या करें? मेरे देह को भी कितनी तकलीफ दिया है, अपने सुख की वजह से, मैं तो फिर२ मुसकराके चलते हैं। आज इतने सब योगी हैं, पांव पड़ते हैं, वो केसे? मैं तुम को आज भी बोलते हैं, तुम किसी को सुख दियो, पुरूर्षाथ करो किसी दुखी दिल के ऑसूं पोंछो, तो तुम्हारी गलती माफ होवे। तुम पुरूर्षाथ नहीं करेंगे, सब से माफी नहीं लेंगे, तो तुम्हारी भी LIFE में कभी भी कीमत नहीं होगी। बिच्छू का काम है डंक मारना, संत का काम है प्रेम करना, वो अपना स्वभाव नहीं छोड़ता, तो हम अपना स्वभाव प्रेम वाला क्यों छोड़ें? जभी तुम को सुख नहीं चाहिये तभी तुम मर्यादा में रह सकते हैं।

प्रेमी :कीर्ति का बोज अंदर में पड़ा है, अभी तक ?

भगवान : कीर्ति मेरी है, जिसने ज्ञान दिया। वो भूल जाऐं क्या? जिसने ज्ञान दिया,उस वजह से कीर्ति हुई, तो उसको कैसे भूलें? तुम्हारी कीर्ति कैसे हुई? जो भी कीर्ति करे उसे बोलो जिस का ज्ञान है, उसको PASS करो।

प्रेमी :नम्रता पूरी नहीं आती है?

भगवान : थोड़ी नम्रता कहॉ से आई? जहॉ से थोड़ी आई वहॉ से पूरी आयेगी, तुम समझो पापी है, झूठे हैं तो अपने लिये है,मैं सत् में ही रहते हैं, कई लोग दुनिया में ठगी करते हैं, चतुराई करते हैं, पर चतुराई से चतुरभुज ना मिले, छोड़ स्याणप ....। संसार की आसक्ति है जन्म मरण का कारण, उससे छूटने का उपाय है परमात्मा में आसक्ति,ये जन्म प्रभू के लेखे। *ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

"प्रेम" [17]

प्रेम माना किसी के लिए भी धिक्कार नहीं है। बाकी प्रेम का मतलब यह नहीं है गले लगाना या बाहर से दिखावा करना।किसी को भी कम देखा तो उसका मतलब तुम अपने को अच्छा समझते हैं। बाहर से दूसरे को खराब कहते हो तो उसकी माना अंदर से तुमको अपनी बड़ाई की इच्छा है और तुम दूसरे को खराब कहकर अपने मन में अपने को अच्छा समझते हो। अपने साथ,चाहे गुरू के साथ, यह तुम धोखा करते हो।तुम सब झूठे हो जहाँ-तहाँ आत्मा-भगवान नहीं देखते हो। अपने को, गुरू को औरों को, देह करके समझते हो,न कुछ आया है,न कुछ गया है, पर बीच में यह सब भूल हो गई है,विस्मृति हो गई है।इसी भूल के कारण सारे अनर्थ,गल्त फहमियाँ, शक, शिकायत, धिक्कार आदि उत्पन्न हो जाते हैं।कोई और दूसरा पाप नहीं है आत्मघात के सिवाय।गुरू के पास GUARANTED ज्ञान है,शक वाला नहीं है कि मेरे पास तुम्हारी दवा नहीं है, मैं तुम्हारी नहीं उतार सकता। जैसे DR. जवाब देते हैं कि CANCER का रोग छूट नहीं सकेगा, इसका कोई इलाज नहीं है,इस तरह गुरू कभी भी उम्मीद नही उतारता है,यह दवा है अंदर की,सर्वरोग का औषध नाम,वह तो तुम्हारे हाथ में ही है अपनी कृपा चाहिए। ब्रह्मज्ञानी को ही बाहरी हालत नहीं है पर अंदर का निश्चय चाहिए, उसे कोई निश्चय वाला ही पहचान सकता है। जो 'तू-मैं' में खड़ा है वो कभी सत्य नही बोल सकता है। सच्चा तो केवल गुरू ही हो सकता है, और कोई भी नहीं,सब मन बुद्धि शरीर में फंसे पड़े हैं,वह वहीं से बकवास करेंगे, केवल गुरू ही है जो अद्वैत आत्मा में टिका है, वह सर्वत्र आत्मा देखनेवाला पक्षपात रहित है, सब में समदृष्टि रखने वाला है। उसका एक-२ वचन STAMP लगा हुआ है। उसे रत्ती भर भी देह का ज्ञान नहीं है,जिसका मन जिंदा है वो कभी भी RIGHT नहीं हो सकता है। DISEASE माना DISEASE माना बेआरामी। यानी लोभ मत कर। केवल राम ही सत्य है वो मैं हूं। रामतीर्थ=राम+TRUTH, SO AM I.ज्ञानी का एक२ MINUTE आनंद में गुजरता है, वो क्यों? क्यों कि उसको जीने की कला आ गई है,कभी भी हालत उसको हैरान नहीं कर सकती है,वो विक्षेपता में भी है,पर वो अंदर से निर्लेप न्यारा है, NON POSSESSION है,कुछ भी करता नहीं है।इसलिए सबसे उपर है,तुम भी उससे सीखो,दुनिया वालों से उल्टा हो जाओ। दुनिया वाले जिधर दौड़ते हैं तुम उससे उल्टी तरफ दौड़ लगाओ तो भगवान से भेंट हो जाएगी। आनंद शांति पा जाओगे।

ओम

हारमोनियम है,बाजा है,मुरली है,उसके आवाज़ पर कैसे सब मस्त होते हैं,तो हम भी अपने से पूछे कि हमारे आवाज़ में कौन सी TUNE है। भली कोई कितना भी बड़ा ज्ञानी हो जाए, LECTURES भी करे, पर मैं उसका शब्द देखेंगे कि वो कौन सी TUNE निकालता है, TUNE भी बहुत बड़ी बात है- भगवान ने बोला हम भी देखते हैं कि कोई तीखी मिर्ची है, कोई लाल मिर्ची है, कोई काली मिर्ची है, ये कौन सा ज्ञान हुआ?

मेरे शब्द में ऐसा प्यार भरा हुआ होवे जो आगे वाला बोले 'फिर से बोलों २,भले मैं किसको गालियां भी दे,चमाट भी लगायें,तो भी उनको अच्छा लगे जो बोले फिर से बोलो,फिर से लगाओ। अभी मेरे रो(भगवान) से सब क्यों बोलते हैं कि भगवान मेरे को फिर से चमाट लगाओ,सारी अंदर की बात है।आज मेरे लिये किसी से भी जाके पूछो इतने पुराने२ योगी हैं वो बोलते हैं कि भगवान ने मेरे को बहुत प्यार किया है,उनके बच्चे भी बोलते हैं कि भगवान ने हमको इतना प्यार दिया है जो कुर्बान जाते हैं। कोई भी शिकायत नहीं करेंगे,तो ये क्या है, तुम बताओ कि तुमने किसके उपर प्यार का ठप्पा लगाया है? जो कोई आके बोले कि इसने मेरे को प्यार किया है।

अभी तुम बताओ तुमने LIFE में किसको भी गल्त शब्द दिया है? या अभी किस को गल्त शब्द देते हैं? जभी किस को गल्त शब्द देते हैं, तो उसको क्या समझते हैं? उसको क्या समझके बोला?वो कौन है? ऑखें भली देखती है पर है कौन?है तो वो ही, कौन कम जास्ती है?कौन उंच नीच है? हमने तो बचपन में एक कविता पड़ी थी कि जे भाई भलो पहिंजो त घट न कहिं खे दिसु निमी खिमी निहार ....

जभी तुम किसको भी शब्द देते हैं तो अपने को क्या समझते हैं? किसको भी गल्त शब्द बोला उस के दिल को दुखाया,उसकी दिल दुखी हुई तो सब तीर्थों का पाप आके तुम्हारे को लगेगा,तम ये याद नहं करते हैं, किसी से भी गल्त शब्द बोला जैसे उसके दिल में HOLE कर देते हैं।

ज्ञान के बाद डरते नहीं है कि कोई ऐसा शब्द बोलके मैं कर्म नहीं बनाउं,इसीलिए कोई भी शब्द बोलो तो विचार करके बाद में बोलो, भले हमारे घर में कोई नौकर .होवे,पापी से पापी होवे, नीच में नीच होवे, हमको उसको कभी भी गल्त शब्द नहीं बोलने का है समझो मेरे घर में कोई जुल्मी है, हमको उसको कोई भी गल्त शब्द नहीं देने का है, एक दिन आपे

ही उसका पाप का घड़ा भरेगा तो निकल जायेगा, पर मैं शल कोई उसको शब्द नहीं देगा,समझो मैंने उसको शब्द बोला और वो मेरा शब्द पकड़के जाके कुछ भी करे..... तो हमारे दिल पर क्या गुज़रेगी? उसका पाप किसको लगेगा? इसीलिए बोलते हैं विचार के बाद में शब्द बोलो।

दुनिया में जो भी नौकरी करते हैं उसको सिखाते हैं कैसे बात करनी चाहिये,कौन सी TUNE से बात करनी है JUDGE को,वकील को, TELEPHONE वाले को देखते हैं कैसे बात करते हैं?तुम को पता नहीं कैसे बात करते हैं, कुछ अनुभव ही नही करते हैं-तुम्हारे लिखने पढ़ने पोथियां भरने से क्या होगा? सब से प्रेम से चलो नम्रता से बात करो, सेवा करो, शब्द भी और भावना भी सबके लिए अच्छी होवे,भावना भी पहुंचती है?एक शब्द की महिमा है।

आज समझो कोई फकीर दरवाजे पर आता है? तुम को कुछ देने का नहीं है, पर तुम उसको चार गाली देता है कि नहीं है, ऐसा नहीं करता है, वैसा... तुमको समझो देने का भी नहीं है फिर तुम उसको गाली कयों देते हैं?फिर उसके अंदर से हमारे लिये क्या निकलेगा?आहें निकलेगा, नहीं देने का है तो चुप में रहे न पर उसको कम जास्ती क्यों बोलेंगे।

प्रेमी :भगवान सेवाधारियों से हम रहते हैं वो अलग२ संस्कार के है तो कैसे बिना शब्द बोले रहें, इसको खोलिये?

भगवान : किस तरह बोलें जो RECEIVE MAN बनायें समझो आपका आवाज़ उंचा है तो नीचा कब बनाया, नौकर से समझो तीखा बोलते हैं: कैसे किया? पानी क्यों डाला? पर बोलो हां पानी कैसे डाला, नीचे से बात करो, किसको भी चाहे पति हो या दुश्मन नीचे से बात करो, मेरा TUNE ही खराब है जब TUNE बने। जो मेरा TUNE हे वो आत्माकार का नहीं बना जैसे वो CATCH करे कि हां ऐसे पानी डालो, ऐसे घी डालो, पर हम ORDER करता है। सन्यासी स्त्री के साथ MATHERAN गया बोला माताजी२ पर TUNE में वो ही ORDER था। बाहर से सन्यास लिया पर TUNE CHANGE नहीं किया हम OBSERVE करते हैं, किसके भी घर पर जाते हैं तो कैसे बोला? हम सब का स्वभाव CATCH करेंगे, LOCAL TRAIN में भी बैठते थे तो देखते थे कि इधर लड़ाई हुई तो किसको क्या बोला? इधर कोई ORDER करके न चले। प्रेम न करो तो ORDER भी कैसे करते हो। मैं समझो प्रेम करते हैं तो ORDER भी करते हैं। तुम कैसे बात करते हैं?कैसे ORDER करते हैं? सब है सिर के साईं। *ओम*

ओम सतगुरू प्रसाद

'तपस्या' *[19]*

प्रेमी : भगवान असल में तपस्या कौनसी करें?

भगवान : मन वाणी की तपस्या है। मन, बुद्धि, वाणी, मन हमारा यूहाँ वहाँ क्यों घूमता है।वाणी में अपशब्द क्यों बोलते हैं?मन में गलत संकल्प विकल्प क्यों करते हैं? बुद्धि क्यों चलती है? शब्द मेरे से गल्त ना निकले। ये है वाणी की तपस्या। मैं तुमको दावे से बोलते हैं, मेरा किसी के पास गल्त शब्द नहीं है। किसको हमने ATTACK नहीं किया है। हमारे पर सौ जनों ने ATTACK किया, पर हमने ATTACK नहीं किया। एक योगी ने बताया कि जैन धर्म में एक दृष्टांत बतात हैं एक गृहस्थी गुरू के पास गया। गुरू ने उसको वचन दिया "दाल अलग-छिलका अलग" शिष्य भाव से ज्ञान सुनके वापस आया, रास्ते में किसी को दाल से छिलके अलग करते देखा, वहाँ ही गुरू का वचन ध्यान किया, उसे समाधि लग गई कि शरीर और आत्मा अलग है। गुरू ने कहा ४८ मिनट भी किसको लगातार समाधि लग जायेगी, तो वो मुक्त हो जायेगा और वो मुक्त हो गया। फिर भगवान ने बोला केवल ४८ मिनट की बात है पर कोई लगातार सात दिन तपस्या करे, जो एक ख्याल भी न आवे, खाना भी ऐसा होवे जो रस न लगे। ऐसे खाये जैसे बीमार को दवाई मिली। फिर चाहे पैदल करे, घूमे भी पर चंचलता न होवे। RELEAX करे । बात न करे। सात दिन पूरा मन भी न आवे, ख्याल भी न आए। ख्याल आये तो बोलो,मेरा की? लगातार OAM में वृति TIGHT रहे। वो मेहनत सफल है, बाकी रोज ४८ मिनट खाली तो कुछ नहीं होगा।

प्रेमी :भगवान राजाओं के लिए कहते हैं कि राजाई छोड़कर ज्ञान लिया तो वो कौन सी राजाई छोड़ी ?

भगवान : राजाई छोड़कर मतलब राजाई का EGO छोड़ा। समझो राजा पलंग पर सोता है, कभी नहीं मिला तो ज़मीन पर भी वो सो सकता है,कभी नहीं मिला तो विक्षेप कोई नहीं। वैसे गहने पहने तो भी शोक नहीं। ये भी ठीक है,वो भी ठीक है। बाकी राजाई छोड़कर भागना थोड़ी है,भागेगा कहाँ।खाना हाथ में मिले,चाहे दोने में, चाहे ठिक्कर में,सोने में या चांदी में। पानी में भिगाके धो के खा लेंगे। क्या फर्क पड़ेगा। शादी में जो पातल में खाते हैं, त्याग किसका करें? त्याग EGO का ही करें।

CONTD. 2.

प्रेमी :भगवान साहूकार लोग पूछते हैं सुख बुद्धि कैसे छोड़ें?

भगवान : सहज में सुख मिला है तो दुख क्यों खरीद करें? ये भी ठग्गी है राजाई छोड़ना।जैन धर्म में एक ने सन्यास लिया तो पूरी JEWELLERY रास्ते पर फैंक दिया तो उससे क्या हुआ? तिजोरी से निकाल कर कर्ता बनके जो फिर फैंका। एक आदमी मरता है उसकी जो चीज़ जहाँ पड़ी है वहाँ ही पड़ी होगी। जो चीज़ सड़ भी जाए तो मरे हुए को शोक नहीं होगा। समझो DEAD BODY हो गयी जीते ही तो वो क्या, ये क्या?मरेला आदमी क्या करेगा। ये अपने को ज्ञान देना है कि मरा हुआ क्या सोचेगा?

प्रेमी :भगवान आपके वचनों में ताकत जो सारी राजाई किसी को भी भुला सकती है।

भगवान : जभी मैंने किसी को कहा कि ये चीज़ छोड़ो तो वो बोलते हैं अभी हम ज़ुबान पर भी नहीं ला सकते हैं। त्याग और ग्रहण की बात ही नहीं है कि सोना छोड़ें या मिट्टी। अपने को देखें ख्याल कौन सा आता है।

सुख भी होवे प्रारब्ध से तो सबके लिये होवे।खाली मैं क्यों सुख लूं। अभी मेरे को कोई सुख की चीज़ है तो तुम दस जने भी उसमें से सुख लेते हैं,तो सबके लिये सुख होवे। ये सहजता का ज्ञान है। बाकी त्याग और ग्रहण दोनों खराब है। यहाँ से मनुष्य संसार छोड़ के जायेगा फिर उधर नया संसार बनायेगा। यहाँ बच्चे छोड़ेंगे वहाँ शिष्यों में मन जायेगा। इसीलिये कहते हैं जो तुम्हारी प्रकृति है उसमें संतोष में रहो।

प्रेमी :भगवान आज अन्दर में आ रहा था राजा ने दुश्मन को राज दिया, चण्डाल के घर से भिक्षा लेके खाया।

भगवान : मैं बोलते हैं ज्ञानी कौन सी होवे, गुरू बोले राजाई दो तो एक क्षण भी न लगायें। बाकी जहाँ मनुष्य पैदा हुआ है वैसा ही चलेगा। दृष्टांतः राजा ने रानी को कहा फकीर की पहली DELIVERY के बाद घर में तीसरे दिन काम करती है, तुम चालीस दिन बैठती हो। तो रानी ने राजा को दिखाया जो अपने घर में पौधे लगाते हैं, उनको पानी रोज़ देना पड़ता है, जंगल के पौधों को थोड़ी देना पड़ता है।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद

[20]

'HOW I FEEL'

BY LORD DADA

मैं अपने को महसूस करता हूं कि मैं निराकार भगवान हूं, मैं ये देह नहीं हूं, मैं भगवान हूं, ये देह नहीं हूं, जो एक दिन प्रारब्द वश छोड़ के जायेगी।

० मैं अशोक रहता हूं, आत्मा, अमर हूं, अजन्मा हूं, अद्वैत हूं, निराकार, निष्काम हूं, इच्छा रहित हूं, सर्वज्ञ हूं, NON POSSESSION हूं, साखी, THOUGHTLESS, जीवन मुक्त, पर शरीर नहीं हूं।

० शूरूआत में मैं एक ही WORD था। WORD से WORLD बना, उस में LORD छुपा हुआ है।

० सारी सृष्टि जो तुम देखते है, वो मेरा ही बढ़ावा है, मैं सच हूं और ये मेरी प्रकृति मिथ्या है।

० मैं किसी के बुद्धि में आनेवाला नहीं हूं, पर ब्रह्म विद्या से ही मेरे को कोई जान सकता है। [illegible] जो कुछ भी दिखाई पढ़ता है वो सब अविद्या है। ब्रह्म विद्या - ब्रह्म श्रोतरी और ब्रह्म [illegible] ही मिलती है। सब जो भी कर्म काण्ड है वो बंधन में डालने वाले हैं। तुम्हारा AIM, लक्ष्य है 'अपने आप को जानना'। अपने आप को न जाना तो कभी भी मन की शांती व आन्नद नहीं मिलेगा।

० मेरा कुछ भी अपना नहीं है जो मैं छोडों, मेरे को कुछ भी नहीं चाहिये, जैसे कि सब कुछ मैं हूं। और जहॉ तहॉ मैं ही हूं, मेरे सिवाए कुछ भी नहीं है।

० वैराग से सारे पदार्थ खुशी से खुवाब हो गए हैं, जैसे कि कभी भी टिकने वाले नहीं है। सगल सृष्टि का राजा दुखिया। इसीलिए आप कैसे किसी भी पदार्थ से खुशी प्राप्त कर सकते हैं।

० जभी मैं कभी भी नहीं कर्ता हूं, तो अपने आप को जानता हूं। मैं बहुत साधारण तरीके से सुनता हूं और बहुत शांत हूं, बहुत ही स्थत हूं। और अपने सूक्ष्म स्वरूप में रहता हूं। मैं ही सच में रहता हूं और दुनिया रहती नहीं है। इसी तरह मैं परधर्म से छूट गया हूं। जैसे कि सृष्टि में सब AUTOMATIC होता है। मैं दृष्टा हूं कर्ता नहीं।

CONTD.2.

० मैं अपने को TRUSTEE,, BANK CASHIER, HEAD MASTER और आया करके जानता हूं। मैं हरवक्त असंग हूं, निरमोही हूं,
सब जो भी शक उठते हैं वो तुम्हारे खलत ख्याल है। [चलता, उठता बैठता गलत है]

० सृष्टि में तीन बातों की ज़रूरत है - एक तो आज़ादी, दुसरा आत्मिक शक्ति तीसरा समानता योग।

० सारी सृष्टि को प्रेम की ज़रूरत है न कि किसी बाहर शक्ति की। मेरे जो कारोबार है वो तुम्हारे को, तुम्हारे सच के खज़ाने को ढूंढने में मदद करेगा। जो भी इस पद को पहचानेगा उसको ही मेरी सची आर्शीवाद है।

० सारी सृष्टि से जब दिल से पूरन त्याग हो गया तो अन्दर ही अन्दर से आत्मा प्रगट हो जाएगा।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद [21]

'एकरस'

"हूं एक सदा बेजोड़ हूं, नहीं दूजा कोई, यह जान लिया"

जे अगर मैं आत्मा हूं, तो पक्क ई पक्क एकरस हूं। तू आत्मा निर्लेप नारायण सदा एकरस ही है। एकरस भी हम गुरू के सिवाय नहीं हो सकते हैं। मेरी सारी पिक्चर गुरू को मालूम होवे। मैं हँसा या रोया, मनोरंजन किया, सब मेरी बात गुरू को मालूम पड़े।

अगर मैं आत्मा हूं तो निश्चय ही एकरस हूं। बाकी कभी देह कभी आत्मा तो अदल बदल ज़रूर होगी। तू आदि से निर्लेप नारायण सदा एकरस है। तुझमें कोई भेद छेद नहीं केवल दिखने मात्र भेद लगे, तो तू मैं हूं। पर अन्दर बाहर एक ही है। बीच का पर्दा कोई दूर करना है, वो है ही है। देह से कोई कैसा भी साधन करे पर सब व्यर्थ जाएंगे। अपने को अपने में ही गुम करें और कोई खुद को खुदा जाने।

हमने जबसे ज्ञान सुना SAME वाणी SAME रहिणी सब SAME। मैं सदैव एकरस रहता हूं। यह हमारे शुरू के निश्चय की बात है। सब कुछ AUTOMATIC होता है। हमारा चहेरा हमेशा एकरस रहता है, कितनी भी हालतें आई। तुम तो गिरते फिरते हैं, एकरस नहीं है। तुम्हारे में इच्छा, लोभ है। अपने से सत्संग नहीं किया है कि मैं साखी, दृष्टा हूं,निर्दोष हूं, एकरस हूं।

हरबात का उपाय निकालो जैसे बाहर बहुत शोर है, तो कमरा बन्द करके बैठो। अपने को ठीक करो। कमरे के बाहर हमारा हक नहीं है। नेयलान का मौजा हो जाओ। एकरस, मौन, शान्त। तुमको यह सबक पढ़ना है कि मेरे को एकरस रहना है। इतने वचन सुनते हैं, किसी में आशा नहीं रखेंगे, तो SAFE होंगे।

जितने भी गृहस्थी है उनको एकरस रहना मुश्किल लगता है। एकरस होने के लिए घर छोड़ने की ज़रूरत नहीं, पर घर में हाज़िर नाज़िर भगवान देखो, तो सामने वाला बोलेगा, इनको यह बात पसन्द नहीं। तो तुम सहज में एकरस हो गए।

कोई भी ऐसा दृश्य नहीं, जो मुहं टेडा करो। गुरू के पास जाने से, ब्रह्म सुनने से, अपने को एकरस रखना है, नहीं तो तुमने ज्ञान सुना ही नहीं है। तुम्हारे FACE से सब देखे कि ये कितना एकरस रहता है।

CONTD. 2.

[2]

ज्ञानी तुमको कैसा भी दिखे बाहर से पर अन्दर एकरस रहता है। एक SECOND में अज्ञानी का MOOD खराब होती है। ज्ञानी को एक SECOND भी नहीं लगता है MOOD बनाने में। कुछ भी हो जाए मेरे को नहीं होगा। मैंने फैसला अपने से कर लिया है कि सुख दुख क्या है?

दूसरे को नहीं मोड़ेंगे, अपने को मोड़ेंगे, एकरस, प्रसन्नचित, तृप्ति में। घर में रहो यह मन बोलेगा - यह बर्तन कैसे टूटा, किधर टूटा? यह मोदीखाना है, पर तुम्हारा एक चम्मच भी जाएगा तो रोएगा।

हम एकरस है तो राक्षस जैसे लोग भी इधर आकर ठंडक प्राप्त करते हैं। तुम्हारी भी इतनी तपस्या होवे जो तुम एकरस रहो, जो कोई भी तुम्हारे को देखकर एकरस हो जाए। लीनता के सिवाय ज्ञान नहीं होगा। ऐसे गुम हो जाएं, जो मैं रहे ही नहीं।

FACE नहीं है MIRROR है। रोज ४० शक्ल बनाने का क्या मतलब है? आइना भी देखे, कि भगवान की राजधानी में आए हैं तो प्रसन्नचित हैं। मैं कैसा हूं? तुम्हारा ऐसा ही सारा दिन मोह द्वेष शकल CHANGE करने में जाता है। मेरे को सब भूत लगते हैं, एक भी नहीं लगता है जो सदैव एकरस, प्रसन्नचित, शान्त स्वरूप होवे। एकरस वह है जो अपने से दिल लगाकर बैठा है। बाकी अगर मन इस उसमें रखेंगे तो कुत्ते की तरह होंगे। इधर भटका उधर भटका, सारा दिन इधर उधर देखते रहते हैं। सुना साधू भी माला फेरते हैं, देखते इधर उधर हैं कि कौनसी माई है, कौन सी पर्स है, कौन सी चीज़ लेके आई है? यह माला फेरते हैं। तुम भी देखेंगे कि यह नहीं आया, वह नहीं आया, किससे बात करूं? किससे हँसूं? मैं अपने में ही हूं, जिधर किधर, तो मैं क्यूं बोलूं, यह नहीं आया, वह नहीं आया। मैं एकरस हूं। बस। जिसको प्यार होगा तो आकर मिलेगा। मेरे को PERSONAL क्या चाहिए? यह हमको देखने का है कि मैं खुश हूं? वचन तो है ही है, जो इधर वचन मिलते हैं वो एक ही वचन बस है। तुम एकरस तभी है जभी एक में भी इच्छा नहीं रखो। दिमाग को हमेशा एकरस रखो। तुम किसके भी कर्म में, स्वभाव में जाऐंगे। मेरे को तुम सब पागल लगते हैं।

कोई भी कर्म में तन मन एकरस करने का है। एकरसता खाली शब्द नहीं है, पर एकरसता है हर हाल में मैं ठीक हूं।सन्तोष में हूं, समानता में हूं। एकरस रहने से तृप्ति आएगी।

CONTD. 3.

जो जिस TIME करना है, उस TIME करो, पर सारा दिन चिन्तन काहे का?जगत के TIME जगत करो,पर चिन्तन नहीं। ऐसा दिमाग को हमेशा एकरस रखो। ऐसे जगत के TIME जगत, पूजा के TIME पूजा,ऐसे जिस TIME जहाँ रहो, तन मन एकरस। जिसकी वृति अन्तरमुख है,शान्त है, स्थिर है, मौन, एकरस है, वह ओम के आलाप को महसूस कर सकता है,जो नित्य निरन्तर अन्दर बज रहा है। सुबह से रात तक कोई भी एक दिन प्रसन्न रहे, तो दूसरा दिन भी अच्छा निकलेगा। फिर आदत बन जाएगी प्रसन्नचित रहने की। कितनी भी हालत आए पर तुम एकरस रहो।

PERMANENT आनंद है, वो अपने में है। और सब रस छोड़कर एकरस हो जा, सब रंग छोड़कर एक रंग हो जा। पहले नम्बर का ज्ञान निराकार का है, एकरस, मुस्कराना। कोई भी मुसीबत आए,एकरस।

एकरस होना माना आत्मा में स्थित होना। हम NATURAL एकरस है, हमको बनाना थोड़े ई पड़ता है, है ही एकरस। हमारा स्वभाव है एकरस रहना। हमको हमेशा तुम क्या देखते हैं? हम हमेशा समान दृष्टि में रहते हैं, एकरस। महलात को आग लगे तब भी एकरस, चाहे शरीर को कुछ भी होवे, पर हमेशा एकरस बनाकर रहें अपने को।

जहाँ तन होवे वहाँ मन होवे, तन मन एकरस। जो तू इधर है, मन कहाँ भी गया, इधर उधर तो हम किसी की चोरी क्यूं करें, जो किसी में मन डालें, उसका कुछ भी कर्म देखें,बात करें, परचिन्तन करें, तो क्यूं किसी में मन रखें? दूसरे में मन रखना माना अपने से दूर होना।अगर अपने में मन है,तो तन मन एकरस।सिमरनि सच्चा ये है जों तन मन एकरस होवे। आज यह PROMISE करो कि यह इच्छा नहीं रखेंगे कि आगे वाला ऐसा करे। दुसरे को नहीं मोड़ेंगे, अपने को ही मोड़ेंगे। एकरस, प्रसन्नचित, तृप्ति मे रहेंगे।

मेरा स्वभाव है एकरस रहना,हमको हमेशा तुम क्या देखते हैं? सबने देखा है हम हमेशा प्रसन्नचित रहते हैं। PHOTO भी हमारा निकालते हैं, हमेशा सब PHOTO एकरस होगा। तुम सर्दी में सर्दी का रूप बन जाते हैं, गर्मी में गर्मी का रूप बन जाते हैं, तो तुमको ज्ञान नहीं होगा। हमको सारा दिन तुम क्या देखते है? एकरस रहना पहला ज्ञान है। किसी को भी देखो कोई चिन्ता में है, कोई मोह में है, क्यूं कि अपने को एकरस बनाते नहीं है। जिसको कोई चाह नहीं,चिन्ता नहीं,वो सदा एकरस ही है।'

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद [22]

'वैराग'

"कोई ऐसी आग लगा दे रे,ये तन मन जीवन सुलग उठे,
दिन दूनी हो. विरह वेदना, पल भर चैन न आये रे"

जिज्ञासू ब्रहमचर्य में रहे, सबसे वैराग ले, मन से भी वैराग ले कि आया अकेला जायेगा अकेला। ज्ञान खत्म होने का भय इसीलिये होता है क्योंकि वैराग नहीं है। ये नहीं सोचा है कब तक बनी रहेगी-किसकी बनी रहेगी। जितना वैराग होगा, उतना अन्दर से ख्याल आपे ही खत्म हो जायेंगे- ये अन्दर के वैराग की बात है।

भगवान के चेहरे से या उठने बैठने से कभी ये नहीं लगता है कि भगवान को वैराग है, पर फिर भी अन्दर में कितना वेराग है। वैराग माना क्या? संसार है भगवान का, जगत दूषण नहीं भूषण है। तू नहीं है, तू अपने से वैराग ले कि तू नहीं है। अगर खातरी है कि चव्वनी भी है तो वैराग नहीं ले सकेगा। हम क्यों आवाज़ करें कि मेरे को वैराग दे। बस Disinterest होना है। अंदर से इतना वैराग होवे, तेरी ऐसी आवाज़ निकले जो सामने वाला भी वैराग में आ जाये, पर गुरू के उपर आंच भी न आवे कि गुरू ने छुड़ाया।वैराग माना Disinterest। घरवालों से खायें,घूमें,पर मेरी इच्छा नहीं है। तुमने ऐसा ज्ञान लिया है जो बोलेंगे मेरे को अभी वैराग लेना है-वैराग क्यों? उनसे दो मीठी बातें भी नहीं करते हैं- लेन देन नहीं करते हैं। उसकी दिल नहीं लेते हैं तो पड़ोस में जाकर मॉ-बहन सहेली बनायेंगे।

अगर कुदरत को देखना है तो बैठके अपने शरीर को देखें, अगर वैराग लेना है तो सारे संसार से एक२ मिनट में वैराग मिल रहा है। क्यों कि सारी माया अपूर्ण है, ब्रह्म ही पूर्ण है। कपिल मुनि ने मॉ देवरति को ज्ञान दिया। उससे ऐसे ही जगत मिथ्या नहीं कराया,पहले आत्मा का ज्ञान दिया।

मेरे को समझ में नहीं आता है- मनोरंजन करते हैं। किसका NATURE हंसी मज़ाक का है, उसको ज्ञान से अंतरमुख होने का है। योगी योगी को वैराग देवे। वैराग तो एक शब्द में है 'क्या मांगूं कुछ स्थिर नाहीं।" किसमें मन रखूं? तंगदिली विकार पैदा करती है। एक फुरने को हटाओ तो दूसरा...। भगवान से पैसा मांगता है तो दो लाख दे- अपनी LIFE RUIN करता है, बरबाद करता है। माया कभी अपने मालिक को शंति नहीं देगी।

Contd. 2.

माया में सदा ही अतृप्त रहेगा। बड़े२ राजा लोग राजाई छोड़कर वैराग क्यों लेते हैं?मनुष्य को वैराग नहीं है कि मैं खुशी के कीड़े से बनकर बैठा हूं, ये ही खराब है जो आगे बढ़ने.नहीं देता है।

सब तू ही तू है या सब मैं ही मैं हूं, भाव बना रहे-अर्थात मैं और मेरे वाला स्वभाव शून्य हो जाये! वह शून्य होते ही सचे वैराग की भी स्थिति हो गई ना। जो फल मिलता है तो पाण वैराग आता है कि हमने ही काला मुहँ किया है-फल निकला है तो अभी क्या करें? पहले उल्टा चले थे- अभी पाण सीधा चलेंगे। वैराग कैसे आयेगा? वैराग माना त्याग नहीं-सन्यास नहीं,पर कोई मेरे से उल्टा चलेगा तभी वैराग होगा।मन में ना रखूं कि ये मेरे से उल्टा चला।वो उल्टा चला ही है, मेरे वैराग के लिये। अपने साथ अभ्यास वैराग करना सीखें-पर केवल सत्संग में आना जाना न करें। सच्चा वैराग ज्ञान से आता है।जो कुछ भी है-मेरे को Interest है? मेरा मन देखो कहाँ जाता है?मैं नीचे नहीं आ सकते हैं। तुम्हारे से भले कितना भी कुछ मिले पर मेरा दिल ऐसा हो गया है-कुछ अन्दर जाता ही नहीं है। इतने उपर चढ़ गये हैं,जो नीचे आते ही नहीं है। Taste में जो भी दुख मिला उसका अनुभव वैराग देता है।उससे वैराग का सबक पक्का करते रहना है।

तुम तो बोलता है तम्हारी प्रकृति सुलभ हो जायेगी, तब तुम वैराग लेगा। पर इस बीच में तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी, जन्म मरण के चक्कर में आयेगा, तो नर्क में चला जायेगा, प्रकृति कब सुलझेगी?यहाँ कोई भी नहीं है,जिसे मैं बुलाकर प्यार करूं, इसमें सूक्षम वृति चाहिये।तुमने किसीको वैराग में रखा ही नहीं है,व्यर्थ में है तुम्हारा वैराग। जिसको शादी अच्छी लगती है तो वो अशोक कैसे रहेगा?पराई शादी में वो ऐसे ही जायेगा।निमत मात्र नहीं चलेंगे! हम नहीं बोलते है मैले कपडे पहनकर जाओ पर जितना ये लोग खुशी करते हैं, उतना वैराग नहीं है। आखिर है क्या? उससे भी क्या होगा-क्या?माया इतनी इकट्टी करते हैं-आखिर में सब छोड़के मर जाते हैं।

झुकना ज़रूरी है,पर हमको अन्दर से वैराग लेना है, ये कब तक२?इससे क्या होगा२? वैराग देते हैं घरवाले-Not बाहरवाले। सन्यासी बनकर कोई चला गया,तो वो झूठा है। वैराग तो है जो वो हमारी Will को

Contd.3.

No करें और हम मुस्करायेंगे। एकदम विचार आ जाये-अभ्यास हो जाये कि मेरे को Turn करने का है कि दुनिया देखे कि ये वैरागी कैसे हो गया। ज्ञान फकीरी का है, तुम पाण अब जास्ती सुख लेते हैं।

तुम्हारी Party में कोई चंचलता करे तो तू ऐसी बात कर ना जो वो वैराग में आ जाये। तुमको दर्द होवे,विवेक होवे,ज्ञान सुनकर लापरवाही नही करनी है। सारी दुनिया में मेरे को प्रिय में प्रिय चीज़ है तो मेरा गुरू है-फिर मैं कहाँ भी दुनियां में बैठेंगे तो अंगारा लगेगा,कहाँ भी बात करेंगे तो अंगारा लगेगा कि मेरे को प्रिय में प्रिय चीज़ कौन सी है? अंगारा लगेगा तो कहाँ भी बैठ नहीं पायेंगे। बक२ नहीं करेंगे,परचिन्तन नहीं करेंगे। मज़ाक करके हम खुद ही भावी बनाते हैं। फिर कभी वो Nature सुधरेगा नहीं। जो ब्रह्मज्ञान में बैठे वो वैराग में बैठे।मज़ाकी आदिमी कभी वैराग नहीं लेगा। जो जिज्ञासु है उसको वैराग होना चाहिये कि ये क्या बात है? हंसी मज़ाक नहीं करना चाहिये।वैराग लें पूरा।कल गुरू के पास एक राजा आया वैराग लेकर,गुरू ने कहा पहले औरत के सामने वैराग ले। मेरे आगे क्या वैराग लेके बैठा है? इसका मतलब त्याग नहीं, पर सच को जानो तो झूठ आपे ही छूटेगा। When knowledge dawns, the world disappear गुरू को लगता है हरेक सीधा सरलता से चले, बाहर के त्याग वैराग से उपर उठे। तुम बोलते हैं ये माया है!माया अभी किधर है?पहले जभी हमारा मन निकले तो वैराग है, फिर त्याग ग्रहण कहाँ है? जो लोग मांगते हैं,वैराग नहीं लेते हैं कि कब तक,ये चीज़ें कब तक? ऐसे ही अँधेरे में जा रहे हैं। वापस आने को आँखें भी नहीं है। **"आप भये बूढे, तृष्णा भये जवान"** हमको जगत को एक बार भूल जाना है।जैसे राजा ने नहाते२ वैराग ले लिया। उसने बोला हम तुमको वैराग दिखाते हैं,और चल पड़ा।उसके सिर पर मुलतानी मिट्टी थी और चल पड़ा।तुम तो बोलतें हैं कि हमारी प्रकृति सुलभ हो जायेगी तब तुम वैराग लेगा।इस बीच में तुम्हारी मृत्यु हो जायेगी। किसको भी वाणी दियो तो घोट-घोट कर दियो।अर्जुन को भगवान कहते हैं अभ्यास वैराग करो।इधर मैं भी तुम्हारे लिये अभ्यास वैराग करते हैं, जो तुमको वाणी घोटकर देते हैं। मन को ज्ञान सुनाना है,वैराग लेना है, वैराग है-है ही भगवान। जिस मनुष्य को सूनापन है,वो समझे भगवान अन्दर नहीं है, वैराग

Contd.4

बैठके ले रहे हैं। इनको अगर भगवान याद होता तो बोलते है ही भगवान। तो मैंने वैराग कैसे लिया?मैंने कौनसा त्याग किया? मैंने क्या किया है?भगवान देखो इनकी शक्ल में है ही नहीं। चेहरे पर मुस्कराहट नहीं है। खाली त्याग करते हैं, बोलते हैं-मैं शॉत हूं। ये सूनी शॉति शॉति मेरे को नहीं चाहिये।

अभी कोई भी सब्जी बनायेंगे तो धोड़ा घी ज़रूर डालेंगे, तो सब्जी मज़ेवाली लगेगी। तो भगवान का साथ भी रसदार जगत है। अगर भगवान के सिवाय तुम्हारी Life है तो देह अध्यास में मरेंगे। वैराग माना Detach, सबसे प्यार करो-फिर भी अलग रहो जो हमको ध्यान समाधि में कोई याद न आए।

ओम

आंम सतगुरू प्रसाद MON.

28-08-2000.

भगवान : विलायत में सब संत एक होते हैं, भले अच्छे है, खराब नहीं है, पर बात है कि ये ज्ञान किधर भी नहीं है।

प्रेमी : भगवान सब जगह बोलते हैं कि हे जीव तू ये कर ये नहीं कर।

भगवान : इधर बोलते हैं कि तुम्हारे से हुआ क्या है? तुम कर क्या सकते हैं? तुम बने क्यों? तुम को बनना ही कुछ नहीं है।

प्रेमी : भगवान इधर Be Nothing, Do Nothing है।

भगवान : बोलते हैं इधर Be Nothing है, Do Nothing है, उधर हमको दान पुण्य कराके नाम निकालते हैं। कोई भी दान पुण्य करता है तो उसको याद तो होता ही है कि मैंने दान पुण्य किया। इधर इसीलिये हम ये नहीं कराते हैं, तुम्हारा नाम कोई नहीं पूछेगा।

प्रेमी : भगवान,इधर सबको अपना अपना Lesson मिलता है।

भगवान : सबसे हमने बात किया है। शरण माना क्या? शरण माना सबक। शरण माना ये नहीं कि पॉव पड़ना, पॉव नहीं पड़ने का है, सबक उठाने का है। जो हम बोले सत्संग में वो उठाने का है।

प्रेमी : भगवान, भजन की Line है "मन की गति संभलिये" इसको खोलिये?

भगवान : मन की गति सम्भाल माना तू बोलता है भगवान को कि मेरा मन मार, पर तू चलता है मन के कहने में, फिर बोलता है मन को मार, ये नहीं करो। जे तन मन धन भगवान को दिया है तो मेरा कुछ नहीं है, भली सब मरे। तुम बोल सकते हैं 'कि मेरे वाले सब मर भी जाये तो भी मेरे को दुख नहीं है'? बोलो ?

प्रेमी : भगवान, ऐसे नहीं बोल सकते हैं, डर रहता है।

भगवान : इसका मतलब तुमने ज्ञान नहीं उठाया है ना। अभी तुम बोलेंगे तो वो क्या सचमुच में मर जायेंगे? इन लोगों को भ्रम होता है।

प्रेमी : भगवान वाणी में आता है कि प्रेम करो,दूसरी तरफ बोलते हैं कि असंग रहो।

भगवान : प्रेम करो माना सच्चा आत्मा का, तू भी आत्मा, वो भी आत्मा तो न्यारा हो जायेंगे, पर जेकर हम मौह को प्यार बोलेंगे तो वो गलत है। मेरे को होवे मोह और मैं बोले कि मेरा है प्यार तो आत्मिक प्यार हुआ ही नहीं।

प्रेमी : भगवान, अहंकार है, इसीलिये प्रेम निकलता नहीं है।

Contd. 2.

भगवान : क्यों कि सब से उपर तुम प्रेम को नहीं समझते हैं। थोड़ा मोह, थोड़ी इच्छा,थोड़ा पदार्थ,थोड़ा घर,थोड़ा ऐसे..।मैं क्या बोलते हैं कि तुम सब के उपर प्यार रखो, बाकी जो टके टके को बातें हैं वो सब छोड़ दियो।

प्रेमी : भगवान क्रोध और मोह नहीं जाता है।

भगवान : ये दोनो ही दुश्मन है महा दुश्मन। क्रोध और मोह बड़े२ दुश्मन है। क्रोध में अन्दर बुद्धि नाश हो जाती है, ज्ञान टिकता ही नहीं है, मोह में भी बुद्धि चट हो जाती है, तो मोह किसको करें? मैं जो बोलते हैं, हे अर्जुन ये सब मरे पड़े है, तुम बोलो।

प्रेमी : भगवान, आज वाणी में सुना कि पैगम्बर से इतनी मेहनत नहीं लियो,ज्ञान सुनके अपने को जानो।

भगवान : मैं मेहनत ऐसे थोड़ेई करते हैं? लोहे को थोड़ेई कुटते हैं,जो मेहनत करते हैं। मेहनत हमने कुछ नहीं किया है। हमने इशारा दिया है कि तू कहाँ मैं कहाँ, तू कया समझता है, मैं क्या समझते हैं, बस इशारा।

प्रेमी : भगवान, हमारे शहर में आपको सब याद करते हैं, सबने Message दिया है।

भगवान : नयी बात कोई बताओ मेरे को कौन याद नहीं करता है? सब मेरे को Message देते हैं, जिधर किधर, पंक्षी भी बोलते हें कि भगवान को बुलाओ,हवा भी बोलती है भगवान को बुलाओ, पर मैं हवा से भी उपर है।

प्रेमी : वाणी में आया कि अगर अहंकार है तो ज्ञान का दरवाज़ा बंद है।

भगवान : जे मेरे को अहंकार है तो ज्ञान अंदर कैसे जायेगा?

प्रेमी : भगवान, ये भ्रम है: 'कि हम बोलेंगे सब मरे पड़े हैं तो वो मर जायेंगे'?

भगवान : कौनसे भ्रम में है? मरेगा कौन? बोलने से मर जायेंगे? बोलते हैं, बाकी सतसंग में दुआ होती है, पिट(बद दुआ) नहीं होती है। हम पिटाते हैं तो वो पाण अमर हो जाते हैं।

प्रेमी : भगवान, आत्म निशचय में टिक नहीं पाते हैं।

भगवान : क्यों कि तुमने वो व्यंवहार नहीं किया है। हम आत्मा समझके व्यंहवार करते हैं, देह समझके व्यंवहार नहीं करते हैं। A-B-C-D, तू देह समझके व्यंवहार करता है तो कच्चा पक्का है। हमने कभी देह देखी नहीं है कि कौन है?

Contd.3.

प्रेमी : भगवान, मोह बहुत तंग कर रहा है?

भगवान : ये तुम जानते हैं तो ऐसी चीज़ क्यों रखी है अपने पास? अभी बताओ मोह किस किस से है? प्रेमी : भगवान, बेटे से ।

भगवान : सुख चाहिये? तो बेटा सुख देता है? वो जन्म से सुख नहीं देता है। देता है? हम बचपन से बोलते थे कि बेटी अच्छी है, वो ससुराल जाके बैठेगी, पर बेटा तंग करेगा। तुम बोलो मैं न्यारे हो गये हैं।

प्रेमी : भगवान, निभय निर्वैर नहीं हो पाते हैं?

भगवान : एक बात बताओ, एक भी आदिमी को कम प्यार किया तो तुम कभी भी अज्ञान से नहीं छुटेंगे। एक आदिमी को भी तुमने कम प्यार किया तो तुम कभी नहीं भगवान के घर में पास होंगे। कम प्यार,अपने से ज्यादा और बच्चों से भी ज्यादा, पति से भी ज्यादा। मेरा किसीसे भी प्यार कम नहीं है, इतने सभी हैं, इनसे पूछो, मेरा कम प्यार है किससे? मैं बोलते हैं कि मैं हमेशा ऐसे बैठके देखते हैं कि मेरा कोई दुश्मन नहीं है कि मैं उसको ज्यादा प्यार करूं,किसको छुपके फोन करूं... कुछ नहीं है।

प्रेमी : भगवान, शिकायत करने की आदत नहीं जाती है? कोई कुछ करते है तो जाके उसको बोल देते हैं?

भगवान : उनको जाके बोलो कि तुमने मेरा Treatment किया, मेरे अन्दर को खोला, अच्छा किया।

प्रेमी : भगवान, एक वचन दीजिये।

भगवान : सुना नहीं वचन? बोला न-हे अर्जुन सब मरे पड़े हैं।

प्रेमी : भगवान, निराकार कुछ नहीं करता है, गुरू सब तरफ से मदद करता है।

भगवान : नहीं निराकार ही सब करता है, गुरू नहीं।

भजन चला - अर्जुन से बोले एक रोज मोहन मदन।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद [23]

'शुक्राना'

ज्ञान का पहला सबक है *'शुक्राना'* और मुस्कराना। जुबान मिली है निराकार की महिमा और शुक्राना करने के लिये। सुबह को पलंग से उठते ही भगवान का शुक्राना मानो और कहो 'भगवान तू ही तो है' 'भगवान तू ही तो है', हमारे से क्या हुआ है, सृष्टि के मालिक तू ही तो है। तुम खाली दुख के समय भगवान को याद करते हैं, फरियाद करते हैं। माया ऐसी है, सुख के समय तो शुक्राने याद नहीं है। राजा तो राज्य में भी रोता है, फकीर मागंकर भी प्रसन्न है। राजा सदा सुखी है, पर एक भी दुख होगा तो भूल जायेगा, उस दुख की ही बात करेगा इसीलिये तुम्हें सदा शुक्राना याद रखना चाहिये,वो तुम भूल जाते हैं। मुझे तो निराकार हरदम याद है कि आज अभी आनंद खुशी में है, अपना भाग्य भला मानती हूं, आज की घड़ी सभागी, मेरी सोई हुई सुरत जागी। मैं सतचित आनंद स्वरूप हूं। सुबह से शाम तक शुक्राना करती हूं। सोने में नींद आ जाती है फिर सुबह सलामत उठती हूं। रात को भगवान पहरा देता है, तुंदरस्त हूं, सब दुनिया मुझे प्राप्त है, सब सुख २१/२ मुझे प्राप्त है। प्यास के Time पानी मिलता है, खाने के समय खाना। स्वांस आपे ही चलती है, सब दुनिया अपने समय में वरत रही है। चांद, सूर्य, पृथ्वी देवता मेरी नौकरी कर रहे हैं। बाग बगीचे सारी दुनिया खेलने के लिये है। पेट साफ होता है, पेशाब आता है सब शुक्राना मानना चाहिये।

लाखों सुख बस, रेलगाड़ी, ऐरोप्लेन, मोटर, कार, टेलीफोन, पोस्ट, आटोरिक्शा सब मेरी सुविधा के लिये एक मिनट मे मेरे पास आ जाते हैं। इतने सारे मज़े रोज ले रहे हैं, उसका मैं हर समय शुक्राना करती हूं। मुझे हरदम याद है पर तुम्हें शुक्राने भूले पड़े हैं। इसीलिये प्रभू भी भूला पड़ा है। प्रभू के सिवाय सब बातें, इच्छायें, सम्बंधी तुम्हें याद है, सब ने कबूल किया है कि बराबर सब सुख हमें मिलते हैं पर उनकी अच्छी बात या शुक्राना हम नहीं करते हैं। बाकी दुख की बात हम सबसे करते हैं, दिल में दुखी भी अपने को समझते हैं। सुख के समय शुक्राना कभी याद नहीं, इसीलिये भूल जाते हैं कि हम सुखी भी है। बस दुखों का भूत हमारे उपर असर करता है। विचार करो तो दुख तो कभी२ आता है बाकी सुख तो हमेशा ही है। इन्हीं सुखों का शुक्राना करें कि हम सुखी है। यदि हमने शुक्राना नहीं किया तो आज से, अभी से शुक्र करे। पहले इतने मिले हुए

[2]

सुखों का शुक्राना आज माने तो स्वभाव ऐसा बन जायेगा कि दुखों में भी शुक्राना निकलेगा। 'दुख दारू सुख रोग भया'। मैंने सबको कहा कि List लिखकर आओ कि तुमने किनते सुख भोगे हैं पर शुक्राना नहीं माना अभी मिलकर एक समय ही शुक्राना मानों तो अभी आनंद प्रगट हो जायेगा।

वैसे भी दुखों की List सुखों की List से कम है, रोजर आज सब खुशी में हूं अपना भाग्य उंचा मानता हूं, दख आ ही नही सकता है। खुशी माना आनंद वह है ब्रह्म। जब भगवान के शक्राने मानते हो तो याद रखो God can do no wrong। घड़ी इक विसरूं ....। मिनट मिनट भगवान का शुक्राना माने, भगवान तुम्हारे साथ है *" सदा बसत हम साथ"*। दृष्टांत : चिड़िया ने भगवान से कहा पेड लगाओ, उसको सात जन्म में पेड की छाया नहीं लिखी थी पर शुक्राने माने तो सात दिन में ही सात जन्म कट गये। भगवान हमेशा ही हमें गोद में बिठाकर रखते हैं।

ओम

ओम सतगुरू प्रसाद [24]

'अपने पर आशिक होना'

दुनिया में अपने को कितना प्यार किया है? तुम दूसरे को प्यार करते हो, उसकी रहिणी देखेंगे तो दूसरे में पड़े होंगे। खूद में टिको, दूसरे की अच्छाई, बुराई तुमको दिखने में आती है कि ये टिका हुआ है, ये नहीं टिका हुआ है। कोई टिका हुआ है तो वो तुमको अपना टिकना (निश्चय) दे देगा? आनद अपना देगा? सुख देगा अपना? शान्ति देगा अपनी निकालके। तुम कहते हैं ये टिका हुआ है मैं नहीं टिका हुआ हूं। माया माया को बढ़ाती है, हिम्मत हिम्मत को बढ़ाती है, प्यार प्यार को बढ़ाता है, निश्चय निश्चय को बढ़ाता है। अपनी आत्मा को भुलाके तुम दूसरे के गुण देखते हैं, दूसरे का कर्म देखते हैं, रोलू कुत्ता है, तो ये आदत गंदी है। A के गुण देखेंगे तो B के विकार देखेंगे। गुण कर्म बुद्धि से तू परे है, वो कैसे ? दो बुद्धि है - एक है देह बुद्धि - संश्य बुद्धि, दूसरी है निश्चय बुद्धि - आत्मिक बुद्धि। आत्मा बुद्धि से आत्म नेष्ठा होगी, देह बुद्धि से जगत पदार्थ सच समझ में आयेगा। वो बुद्धि Useless है जो देखती है कि ये टिका हुआ है, मैं नहीं, यह जानता है, मैं नहीं, इसको Lecture करने आता है मेरे को नहीं। कोई भी जब घर से आया, तो क्या जानता था? जो भी तुम आज है गुरू ने बनाया है। You have made me what I am today. जिसने आप को बनाया उसको भुलाके टके२ में अपने को बेच देते हो। तुमको अपने मूल्य का पता नहीं है कि तुम्हारा कौन सा मूल्य है? मूल्य को पहिचानो आज जो तुम अपने को निकमा समझते हैं, तो नास्तिक है, गंधा है, बेसमझ है। तुम अपने उपर आश्कि हो जाओ कि मेरी सब को ज़रूरत है, जब से गुरू की नज़र पड़ी है तो सब देखते हैं। वो अगर नहीं बनाते थे तो कौन देखता था? गुरू तुमने जिसके उपर नज़र किया वो पक्का फलता फूलता है। अगर तुम Cut-Cut करेंगे तो गुरू भी Cut-Cut करेंगे, पीछे तुम किस काम का नहीं होगा। ना घर का ना घाट का। सारी दुनिया की सुन्दरता तुम गंवा देते हैं, टक्के२ के सुख में जो दूसरे पर आश्कि होते हैं। जैसे कुत्ता कांटे में। हम खाली कांटा फेंकते हैं, कुत्ता कांटे में ही अपना खून पीता है, सो तुम अपना ही खून पी रहे हो, जो अपने को गिराते हो। तुम को गुरू हस्ती देता है, जो तुम कहाँ भी जाकर अपने से आनद ले सकते हो। अभी भी ले सकते हैं, पर मैं थक गये हैं जो तुम दूसरे के पीछे लटक रहे हैं! ना लेने वाला सुजाग है, ना देनेवाला सुजाग है।(सुख)

Contd.. 2.

[2]

तुम लोगों की आदत खाली खराब गलत है, एक खुडे से निकलकर के दूसरे में पड़ना। प्रिय में प्रिय क्या है? घरवाले भी तुम्हारे से तृप्त होंगे तो तुम भी दुख सुख में आराम करेंगे, तो भागने की नहीं करेंगे, जागने की करेंगे। Total घर में ही सुख है, चाहे बाहर का घर, चाहे शरीर का घर, चाहे आत्मा का घर। बाहर टोले सो भरम भुलाये।

ओम